जनवरी-2015 ◆ वर्ष 3 ◆ अंक 8 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

जनवरी-२०१५

बाग-बाग में पुष्प खिले हैं,
विविध रंग के प्यारे-प्यारे।
इन रंगों को ईश बनाए,
'सत्यार्थ' प्रकाश यही बतलाए।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१० ३७

हरदम
के व्यंजनों का आधार,
है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार।
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

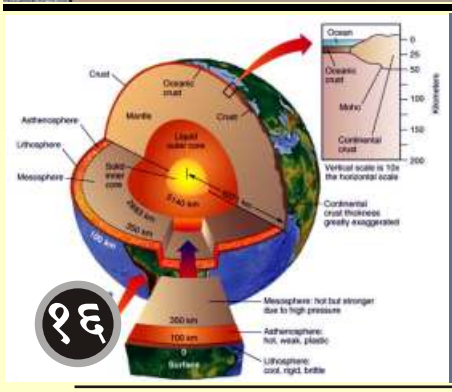

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११५
माघ कृष्ण द्वितीया
विक्रम संवत्
२०७१
दयानन्दाब्द
१९०

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

०७ साधु या शैतान

१६ जीव हिंसा और भूकम्प

January- 2015

०४	वेद सुधा
०६	पेप्सी और कोका कोला
११	विभिन्न संस्कृतियों में नव वर्ष
१४	प्रजापति और मानव
१६	गणितशास्त्र का मूल वेद
२१	एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें
२४	कसाइयों की सभ्यता
२५	श्रद्धानन्द को शत्-शत् नमन
२८	गृहस्थ जीवन कर आदर्श स्वरूप
२९	कथा सरित
३०	स्वास्थ्य- ज्यादा असरदार है चना

समाचार २६
हलचल २७

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ३ अंक - ८

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

यजुर्वेद में राष्ट्र-भावना २

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधि महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पतां।

गतांक से आगे .....

- यजुर्वेद २२/२२

डॉ. भवानीलाल भारतीय

सबल राष्ट्र के बारे में यजुर्वेद का विचार एक नया मोड़ लेता है जब वह देश के नवयुवकों में ओज, तेज, वीरता, धैर्य, पराक्रम आदि गुणों के समावेश की बात कहता है। राष्ट्र के निर्माण और उसे तरक्की दिलाने में युवा वर्ग जितना कुछ कर सकता है उतना अन्यों के लिए सम्भव नहीं है। इस परिप्रेक्ष्य में भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास को हम देखें तो यहाँ नौजवानों का एक बड़ा समूह दिखाई देता है जिस ने मातृभूमि को गुलामी के पाश से मुक्त कराने के लिए वीरता के साथ-साथ त्याग और आत्मबलिदान का अविस्मरणीय आदर्श उपस्थित किया था। जिन वीरों और शहीदों ने शस्त्रबल के द्वारा पराधीनता की शृंखलाओं को तोड़ने की प्रतिज्ञा की, वे संख्या में कम नहीं थे।

पं. रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, अमर शहीद भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव, अशफाकउल्ला खाँ, गेंदालाल दीक्षित, पं. सोहनलाल पाठक, मदनलाल धींगड़ा, करतारसिंह सराभा, ठाकुर रोशनसिंह जैसे क्रान्तिवीरों की यह नामावली पर्याप्त लम्बी है। साथ ही यह भी ध्यान रखना होगा कि इन क्रान्तिवीरों के दीक्षा गुरुओं ने एक ऐसी विचारधारा (thesis) को जन्म दिया था जिस से प्रेरणा लेकर ये लोग स्वदेश के लिए बलिदान-पथ पर बढ़ते गये। क्रान्तिकारी चेष्टा के आद्य प्रवर्त्तक प. श्यामजी कृष्ण वर्मा, लोकमान्य तिलक, योगी अरविन्द, लाला हरदयाल तथा वीर सावरकर जैसे लोग क्रान्ति-शास्त्र के प्रस्तोता तथा व्याख्याता थे। देशहित के लिए कार्य करने वाले ये सभी महापुरुष युवा ही थे और युवाकाल में ही उन्होंने पुरुषार्थ के ये कार्य किये गये थे। इस वेद मंत्र का **'युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्'** भाग इसी तथ्य का परिचायक है।

वैदिक चिन्तन की एक विशेषता जो हमें दिखाई देती है, वह है प्रकृति और उस के समृद्ध परिवेश से नागरिकों का प्रेरणा लेना। इतिहास साक्षी है कि सप्तसिन्धु प्रदेश के ऋषि मुनियों ने नदियों के तटों पर, पर्वतों की उपत्यकाओं तथा गुफाओं में सघन वनस्पतियों तथा लता-वृक्ष संकुल वनों में वैदिक मंत्रों का अध्ययन, चिन्तन तथा आलोचन किया था। अतः यह स्वाभाविक था कि वे जीवन-निर्माण, सामाजिक संगठन तथा राष्ट्रोत्थान में प्रकृति की भूमिका को समझते। आलोच्य मंत्र में राष्ट्र के व्यापक हित में मनुष्य वर्ग (ब्राह्मण, क्षत्रिय, नारी, युवक आदि) तथा पशु वर्ग (गाय, बैल, घोड़े) का उल्लेख किये जाने के पश्चात् प्रकृति के उन अवदानों की चर्चा की गई है जो धरती को उर्वरा बनाते हैं, जीवों के हित के लिए फल, मूल, औषधियाँ तथा वनस्पतियों को उत्पन्न करते हैं। समग्रतः कहें तो हमारे योग (पारलौकिक उन्नति) तथा क्षेम (ऐहलौकिक उन्नति) को प्राप्त कराने में प्राकृतिक विभूतियों का बड़ा योगदान है।

अन्न, फल, वनस्पति तथा औषधियों का उत्पादन अच्छी वर्षा पर निर्भर है। वेदों में अनेक मंत्र आते हैं जो वर्षागम से सम्बन्धित हैं। अथर्ववेद का एक प्रकरण वर्षा से सम्बन्धित है। वर्षाकामी की यहाँ यह प्रार्थना है- सारी दिशाएँ बादलों से भर जायें, वायु के झोंके बादलों को ले आयें, गर्जना करते ये मेघ वर्षा के द्वारा सम्पूर्ण धरती को तृप्त करें। हमारी कामना है कि गर्जना करते बादल आकाश में छा जायें, उनके गर्जन-तर्जन से भी समुद्र दोलायमान हो जायें। वर्षा से धरती तृप्त हो, जिस से

कृषक वर्ग को सान्त्वना और आनन्द मिले। विद्युत्नाद के साथ तीव्र वेग से हवाएँ चलें, पवन से प्रताड़ित मेघ वर्षा के द्वारा धरती को तृप्त कर दें। कल्याणकारी हवा चलती रहे, वर्षा आगमन के पहले सूर्य का प्रचण्ड उत्ताप अनुभव हो, गर्जना करता हुआ मेघ बरसे जिस से सम्पूर्ण जैवी प्रजा को तृप्ति मिले।

राष्ट्र-प्रार्थना से सम्बन्धित इस मंत्र में **'निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु'** की प्रार्थना है। वर्षा भी जब यथा समय बरसे तभी उस से लाभ मिलता है। वर्षा का सर्वथा न होना अथवा आवश्यकता से अधिक होना दोनों ही विपत्ति के कारण बनते हैं। शताब्दियों से मानव अतिवृष्टि तथा अनावृष्टि के अभिशापों को झेलता आया है। अतः हमारी सार्थक प्रार्थना यही होगी-यथाकाम तथा यथासमय बादल बरसें। परिणामस्वरूप औषाधियाँ उपजती रहें। वैदिक औषधि विज्ञान यों तो अध्ययन का अलग विषय है, यहाँ संकेत रूप में इतना ही लिखना पर्याप्त होगा कि मनुष्य के शरीर, मन और बुद्धि के स्वास्थ्य एवं विकास में इन औषधियों का प्रयोग सदा से वांछनीय रहा है। अन्ततः व्यक्ति के जीवन का जो लक्ष्य 'योगक्षेम' की प्राप्ति है, वही राष्ट्र का लक्ष्य है। राष्ट्र के नागरिक सदा सर्वदा अपने इहलौकिक तथा पारलौकिक हितों को प्राप्त करते रहें, वैदिक राष्ट्र के अभ्युत्थान की यही कसौटी है।

राष्ट्र की धारक शक्तियाँ-भाषा, संस्कृति और धरती

जैसा कि हम देख चुके हैं किसी भौगोलिक इकाई का नाम राष्ट्र नहीं है। प्राकृतिक परिवेश से भिन्न कुछ ऐसे तत्त्व हैं जो राष्ट्र एकता, संघबद्धता तथा एकसूत्रता प्रदान करते हैं। समस्त राष्ट्रवासी कुछ ऐसी सामान्य मान्यताओं से जुड़े रहते हैं जो उन में परस्पर समानता के भाव जगाती हैं। राष्ट्र को धारण करने वाले ये तीन तत्त्व यजुर्वेद में कल्याण करने वाली तीन देवियों के नाम से उल्लिखित हुए हैं। इन्हें कही इडा, सरस्वती, मही तो अन्यत्र सरस्वती, इडा तथा भारती कहकर पुकारा गया है। २० वें अध्याय के तयालिसवें मंत्र में सरस्वती, इडा तथा भारती की चर्चा आई है, तो २६ वें अध्याय के उन्नीसवें मंत्र में भी इन्हीं का उल्लेख हुआ है। वस्तुतः उक्त तीन देवियाँ क्रमशः भाषा, संस्कृति तथा धरती माता की प्रतीक हैं।

राष्ट्र के नागरिकों को एकता तथा समानता के बन्धन में बाँधने का सर्वश्रेष्ठ उपाय उन का एकभाषी होना है। इस का यह अर्थ नहीं कि विशाल राष्ट्र के लाखों-करोड़ों नागरिक पृथक्-पृथक् भौगोलिक पर्यावरण, जल, वायु, जीवन जीने के विभिन्न मानदण्डों के होने पर भी एक ही भाषा को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का साधन बनायेंगे। निश्चय ही भाषा में बदलाव आने के कई कारण होते हैं। तथापि यह आवश्यक है कि समस्त राष्ट्र के लोग अपने पारस्परिक आदान-प्रदान के लिए एक समान भाषा का प्रयोग करें। अतीत काल में संस्कृत भारत की प्रधान भाषा थी। कालान्तर में विकसित पालि, प्राकृत, मागधी, अपभ्रंश तथा उत्तरवर्ती काल में प्रचलन में आई वर्तमान भारतीय भाषाएँ किसी न किसी रूप में संस्कृत की सन्तान हैं। यह माना जाता है कि दक्षिण भारत में प्रचलित तमिल, तेलुगु, कन्नड़ तथा मलयालम भाषाएँ आर्यभाषा परिवार से भिन्न द्रविड़ परिवार की भाषाएँ हैं तथापि यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि इन भाषाओं ने भी संस्कृत से अपार शब्द-राशि ग्रहण की है। मुख्य रूप से तेलुगु, मलयालम तथा कन्नड़ में संस्कृत शब्दों की प्रचुरता है।

कालान्तर में खड़ी बोली हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा या जनभाषा के रूप में विकसित होने का अवसर मिला। हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग तथा उस की सर्वत्र स्वीकार्यता ने उसे स्वतन्त्र भारत में राजभाषा तथा सभी राज्यों के पारस्परिक वैचारिक आदान-प्रदान की भाषा का दर्जा दिलाया है। 'सरस्वती' के नाम से वेद ने 'भाषा' को ही राष्ट्र की एकता का प्रमुख सूत्र बताया है। कालान्तर में सरस्वती को ज्ञान की देवी माना गया।

संस्कृति दूसरा धारक तत्त्व है जो किसी राष्ट्र की एकता तथा उस की सबलता का कारण बनता है। यों देखा जाये और मानव समाज की एकता की बात करें तो विश्व मानव की एक ही संस्कृति होनी चाहिए। यजुर्वेद में ही सम्पूर्ण विश्व की संस्कृति को **'विश्ववारा'** कहा गया है। इसलिए कि वह समस्त मानव जाति को एकता के सूत्र में बाँधने वाली है। तथापि मनुष्य का यह स्वभाव है कि वह जीने के विविध ढंग तथा जीवन-यापन की विविध प्रणालियों का आविष्कार कर लेता है। मनुष्य की

चिन्तन-प्रणाली, उस का दर्शन तथा विचार-सम्पत्ति अन्ततः उस की जीवन-यात्रा के निर्धारक बनते हैं और वह एक पृथक् संस्कृति विकसित कर लेता है। मनुष्य का भौतिक रहन-सहन, खान-पान, कार्य, व्यवसाय आदि सभ्यता के अन्तर्गत आते हैं जबकि जीवन और जगत् के प्रति उस के दार्शनिक विचार, अतीत के प्रति दृष्टि तथा उन की नैतिक एवं आचार विषयक धारणाएँ उस के सांस्कृतिक विचारों को आकार प्रदान करती हैं। वेदों में जैसे दार्शनिक विचार विवेचित हुए हैं, सृष्टि के रचयिता तथा उस की रचना के प्रति जैसे भाव स्फूर्त उद्गार व्यक्त किये गये हैं, मानवता तथा सम्पूर्ण जीव-जगत् को एक ही माला में पिरोये गये मानकों के रूप में चित्रित किया गया है, यह सब विचारधारा उस की संस्कृति के रूप में व्यक्त हुई है। राष्ट्र का दूसरा धारक तत्त्व यह संस्कृति ही है। यही मानव की प्रथम विश्ववारा संस्कृति है।

यह सत्य है कि वेदों ने सम्पूर्ण धरती को ही मनुष्य की माता के रूप में स्वीकार किया है तथा भौगोलिक विभाजन के आधार पर भिन्न-भिन्न राष्ट्रों की कल्पना बहुत बाद की है। तथापि वेदों में धरती का जैसा गुणगान किया गया है वह यह बताता है कि इस पर रहने वाला मानव उस के प्रेमपाश में आरम्भ से ही आबद्ध रहा है। उस पर उगने वाले वृक्ष और वनस्पतियाँ, लहलहाते खेत और उद्यान, उस की क्रोड़ में क्रीड़ा करने वाले विभिन्न जीव जन्तु तथा सर्वोपरि, उस पर निवास करने वाला मानव ही इस का शृंगार है। प्रकारान्तर से मानव का धरती के प्रति प्रेम सहजात है, अपरिहार्य है। भाषा, संस्कृति और धरती के प्रति अकृत्रिम प्रेम ऐसे तत्त्व हैं जो राष्ट्र को सबल बनाते हैं यही देवियाँ राष्ट्र को धारण करती हैं।

३/५ शंकर कॉलोनी
श्री गंगानगर- ३३५००१

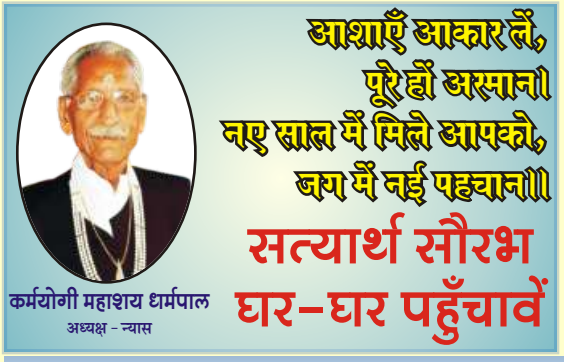

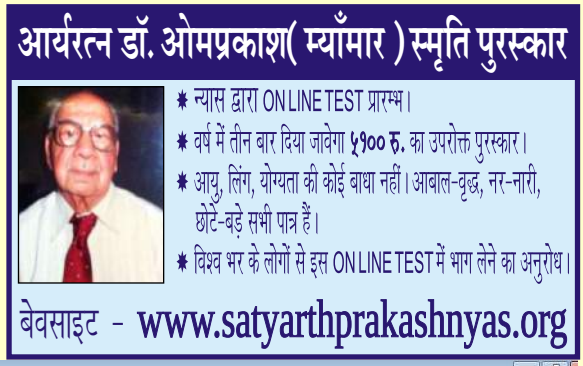

आत्म निवेदन

साधु या शैतान

इतिहास गवाह है कि असत्य और पाखण्ड के विरुद्ध आवाज उठाने वालों ने, सत्य को उद्घाटित करने वालों ने न केवल विरोध सहा है बल्कि अपनी शहादत भी दी है। सुकरात, गैलीलियो तथा ब्रूनो इसके प्रमाण हैं। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का तो सारा जीवन ही पाखण्ड-विरोध के कारण स्वार्थी तत्त्वों के निशाने पर रहा। उन्होंने अपने जीवन में क्या-क्या नहीं सहा? यहाँ तक कि अनेक बार विषपान भी करना पड़ा। अन्ततोगत्वा उनका प्राणान्त भी ऐसे ही षड्यंत्र के कारण हुआ। अभी हाल में अन्धविश्वास निर्मूलन समिति के संस्थापक अध्यक्ष श्री डाभोलकर की भी ऐसे ही ढोंगी व स्वार्थी लोगों द्वारा हत्या कर दी गई।

हरियाणा की धरती पर भी धर्म और आस्था के नाम पर पाप, अधर्म और आतंक का साम्राज्य स्थापित किया जा रहा था। पर कोई भी, यहाँ तक कि हरियाणा सरकार तथा प्रशासन भी आँखें मूँदे रहा। रामपाल नाम के शैतान ने साधु के वेश में १९९९ में करौंथा में

सतलोक आश्रम की स्थापना की। इसके लिए भूमि भी षड्यंत्र द्वारा प्राप्त की गई। भोले-भाले श्रद्धालुओं की आस्था का दोहन कर देखते-देखते विशाल भवन तैयार हो गया। निर्माण इस प्रकार कराया गया कि अन्दर क्या हो रहा है किसी को पता न चले। भक्तों के नाम पर अपराधी तत्व तथाकथित आश्रम में पनाह लेते रहे। रामपाल और इनके जैसे (अ) धर्मगुरु किस प्रकार लोगों की आँखों पर पट्टी बाँधने में सफल हो जाते हैं कि उन्हें अपने चारों ओर गलत कार्य होते हुए भी गलत नहीं दिखते यह आश्चर्य का विषय है। प्रशासन धर्मस्थल होने के नाते छानबीन का साहस नहीं रखता। और ऐसे आश्रम अपराधियों की पनाहगाह बन जाते हैं। कुछ वर्ष पूर्व आसाराम बापू के स्टिंग ऑपरेशन में यह तथ्य उजागर हुआ था कि वे भी अपराधियों को बेधड़क अपने यहाँ शरण देते थे। यह वीडियो आज भी यू-ट्यूब पर उपलब्ध है। रामपाल के गढ़ में भी नक्सली पनाह लेते थे। पुलिस ने भगत जी के नाम से आश्रम में रह रहे एक नामजद नक्सली को गिरफ्तार किया था। रामपाल पर नरबलि देने के भी आरोप हैं। रामपाल के खिलाफ जिला जीन्द के नरवाना थानान्तर्गत गाँव दबलैण निवासी हरिकेश ने हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की थी जिसमें आरोप था कि रामपाल ने उसके ३२ वर्षीय पुत्र रणधीर की बलि देने हेतु २१ अगस्त २०१४ में हत्या की थी।

'जो कोई मेरे साथ मन्त्र का पाठ कर ले वह मर भी जावे तो भी उसका मनुष्य जन्म गारंटीड है।'

-रामपाल

रामपाल ने हरियाणा में तीन सतलोक आश्रम स्थापित किए थे। १९९९ में रोहतक के करौंथा, २००१ में हिसार के वरवाला और इसी इलाके में एक अन्य आश्रम बनाया।

धीरे-धीरे ये आश्रम अय्याशी व आतंक के अड्डे बन गए। वरवाला के सतलोक आश्रम के अन्दर अब जाकर पुलिस घुस पायी तो स्तब्ध रह गयी। महिलाओं के टायलेट में कैमरे, आश्रम में मिले प्रेग्नेन्सी किट तथा कन्डोम अपनी कहानी स्वयं कह रहे हैं। अपने आप को सन्त कहने वाला यह व्यक्ति अपने साथ सैंकड़ों कमाण्डो क्यों रखता था? जैसा कि कहा जा रहा है मध्यप्रदेश के बैतूल स्थित आश्रम में इसके रिश्तेदार कमाण्डो को हथियार चलाने की ट्रेनिंग क्यों देते थे, ये कमाण्डो क्यों तैयार किए जा रहे थे? आश्रम में भारी मात्रा में अत्याधुनिक हथियार, पेट्रोल बम व अन्य हथियार क्या कर रहे थे यह चिन्त्य है।

ऐसे अय्याश व आतंकी के विरुद्ध जब पूरा प्रशासन मौन था तब आर्य समाज ने आवाज उठाई तथा मुखर विरोध किया। पर सदैव की भाँति असत्य का पर्दाफाश करने की कीमत आर्य समाज को भी चुकानी पड़ी।

हरियाणा में भगवान आए

विश्वभर के अनेक भविष्यवक्ताओं का नाम सहित उल्लेख करते हुए दावा किया है कि उनकी तथा स्वयं कबीर साहब की भविष्यवाणी के अनुरूप रामपाल के रूप में सर्वोपरि भगवान कबीर का अवतार अपने बच्चों के दुःख दूर करने के लिए हुआ है।

लोगों को भ्रमित करने हेतु रामपाल की वेबसाइट पर यह दावा किया गया है।

सन् २०१३ में आर्य समाज के अहिंसक प्रदर्शन पर आतंकी के वार के फलस्वरूप संदीप आर्य तथा आचार्य उदयवीर को अपना बलिदान देना पड़ा। यूँ तो अनेक बाबाओं के कारनामे उजागर हुए, वे गिरफ्तार भी हुए, अन्ध भक्तों ने विरोध भी किया पर ऐसा कभी देखा-सुना नहीं गया जैसा रामपाल को गिरफ्तार करने में हुआ। हरियाणा की ४०,००० पुलिस भी बेबस हो गयी। आश्रम से बाकायदा गोलीबारी की गई। ६ व्यक्तियों की मौत और २०० लोग घायल हुए। चार महिलाओं के शव आश्रम के स्टाफ ने पुलिस को सौंपे। ये महिलाएँ आश्रम में कैसे मरीं! यह भी प्रश्न है। रेपिडएक्शन फोर्स ने अन्ततोगत्वा मोर्चा सँभाला तब चूहा अपने बिल में अन्तिम गहराई तक अर्थात् तहखाने में छिपा मिला। यह है तथाकथित धर्मगुरु की हकीकत। अभी तो और तथ्य सामने आने वाले हैं। इस एक गिरफ्तारी में कुल ४० करोड़ रु. खर्च हो गए। रामपाल के खिलाफ धारा १२१ के अंतर्गत अर्थात् भारत सरकार के खिलाफ युद्ध छेड़ने का आरोप लगा है। १२१ ए, १२२, १२३ भी राष्ट्रद्रोह से संबंधित हैं।

इस प्रकार एक और धर्मगुरु का पर्दाफाश हुआ। आर्य समाज के जांबाजों का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। कहते हैं समय बदलते देर नहीं लगती। करीब ६ माह पूर्व १४ जुलाई को हिसार की कोर्ट में जब रामपाल आया था तब उसके हजारों समर्थकों ने हिसार को जैसे बन्दी बना लिया था। जगह-जगह रामपाल की जय जयकार हो रही थी। लेकिन करोड़ों के आश्रम में शहंशाह की तरह रहने वाला रामपाल आज २०,००० रुपये के लिए भी तरस गया। हिसार कोर्ट ने रामपाल के विरुद्ध FIR ४२७ में २० हजार के बाण्ड पर जमानत का आदेश दिया पर आज अरबों के मालिक, लाखों के चहेते रामपाल के पास एक व्यक्ति नहीं था जो उसकी जमानत के लिए २०,००० का बाण्ड भरे।

परन्तु एक शाश्वत प्रश्न अभी भी उपस्थित है। हमने पहले भी लिखा था, आज भी यही प्रश्न उपस्थित है। रामपाल को जन, धन, बल किसने दिया? शास्त्रों व धर्म के मर्म से सर्वथा अनजान रामपाल इतना समर्थ, धनवान व प्रभावशाली कैसे बना? उत्तर बुरा लग सकता है पर है कटु सत्य- हमारी अपनी मूढ़ता से। आपने कभी कृष्णावतार नाम के बाबा का नाम सुना होगा जो अब जेल की हवा खा रहा है। वह अपने पीकदान में पान की पीक थूँकता था भक्तगण उसे प्रसादरूप ग्रहण करते थे। है न मूर्खता की पराकाष्ठा। ऐसा ही रामपाल भी करता था। बताया जाता है कि वह दूध से नहाता था तथा इस दूध की खीर बनती थी। यह खीर बड़ी चमत्कारी बताई जाती थी तथा प्रसादरूप बाँटी जाती थी। जिसे सुनकर-पढ़कर भी जिगुप्सा प्रतीत होती है वैसा जब हजारों लाखों द्वारा प्रसन्नतापूर्वक किया जाता है तब रामपालों का पाशविक बल वृद्धि को प्राप्त होता है। अतः यदि रामपालों के निर्माण की फैक्ट्री बन्द करनी है तो 'विवेक' की शरण में जाना ही होगा। अन्य कोई मार्ग नहीं है।

रामपाल की लग्जरी बस, बुलेटप्रूफ टाटा सफारी जिप्सी

अगर बस की बात की जाए तो ये किसी फिल्मी सितारों की वैनिटी वैन से कम नहीं है। पूरी तरह से वातानुकूलित बस में तीन केबिन बने हुए हैं।

तीनों में अलग-अलग दरवाजे लगे हुए हैं। ऐशोआराम की जिंदगी जीने वाले रामपाल की इस बस में आगे के केबिन में चालक, पीछे रामपाल के दो सहायक और बीच के केबिन में खुद रामपाल सवार होता था। चालक के केबिन में तीन लोग बैठ सकते हैं, लेकिन यहाँ से वे दूसरे केबिनों में नहीं देख सकते। यानी पीछे बस में क्या हो रहा है, चालक यह नहीं देख सकता। रामपाल के चढ़ने के लिए पीछे वाले केबिन में स्पेशल विंडो है। इसी बस के पीछे वाले केबिन के साथ किचन भी है। इसमें खाना बनाने की तमाम सुविधाएँ हैं। इस किचन में एक फ्रीज भी रखा है। इस लग्जरी बस के मुख्य केबिन में एक बड़ी चेयर के साथ रामपाल के लिए बिस्तर लगा है, ताकि वह लेटे-लेटे थक जाए तो उस पर बैठकर आराम कर सके। यहाँ पर एक मेज भी है। कपड़ों के लिए एक अलमारी है। ड्रेसिंग टेबल में तरह-तरह के सौंदर्य प्रसाधन रखे गए हैं।

इसी केबिन में बेडरूम भी बनाया गया है, जिससे बाथरूम भी अटैच है। बाथरूम में नहाने से लेकर शौचालय तक की सुविधा है। इसमें अंग्रेजी सीट लगी है। यही नहीं पानी की टोंटी शावर भी है। पानी गर्म करने के लिए गीजर है। नहाने के लिए पीयर्स की साबुन रखी जाती थी। मतलब यह कि रामपाल की यह लग्जरी बस एक चलता फिरता फ्लैट है, जिसे जहाँ चाहो साथ लेकर जाओ।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

श्री राजीव दीक्षित
(स्मृति शेष)

पेप्सी और कोका कोला

एक पेय पदार्थ है जिसको हम कोल्ड ड्रिंक के नाम से जानते हैं। इस क्षेत्र में अमेरिका की दो कंपनियों का एकाधिकार है, एक का नाम है पेप्सी और दूसरी है कोका कोला। १९९०-९१ में दोनों कंपनियों का संयुक्त रूप से जो विदेशी पूँजी निवेश था भारत में, उसे सुन कर आश्चर्य करेंगे आप। दोनों ने मिलकर लगभग १० करोड़ की पूँजी लगाई थी भारत में, कुल जमा १० करोड़ रुपया (डॉलर नहीं)। अर्थशास्त्र की भाषा में इसको Initial Paidup Capital कहते हैं। इन दोनों कंपनियों के कुल मिलाकर ६४ कारखाने हैं पूरे भारत में और मैं उन कारखानों में घूमा और इनके अधिकारियों से बात करके जानकारी लेने की कोशिश की, क्योंकि इनके वेबसाइट पर इनके बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं होती है। इन कंपनियों ने भारत के शेयर बाजार में भी अपनी लिस्टिंग नहीं कराई है, इनका रजिस्ट्रेशन नहीं है हमारे यहाँ के शेयर मार्केट में। बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज BSE या NSE में जिन कंपनियों की लिस्टिंग नहीं होती उनके बारे में पता करना या उनके आँकड़े मिलना एकदम असंभव होता है।

इन कंपनियों के एक बोतल पेय की लागत मात्र ७० पैसे होती है। आप कहेंगे कि मुझे कैसे मालूम? भारत सरकार का एक विभाग है जिसका नाम है BICP, ब्यूरो ऑफ इंडस्ट्रियल कास्ट एंड प्राईसेस, यही वो विभाग है जिसे भारत में उत्पन्न होने वाले हर औद्योगिक उत्पादन की लागत पता होती है, वहीं से मुझे ये जानकारी मिली थी। आप हैरान हो जायेंगे ये जानकर कि ७० पैसे की जो ये लागत है इनकी वो एक्साइज ड्यूटी देने के बाद की है, यानि एक्स-फैक्ट्री कीमत है ये। अगर एक बोतल १० रुपया में बिक रहा है तो लगभग १५०० प्रतिशत का लाभ ये कंपनी एक बोतल पर कमा रही है और जब पेप्सी और कोका कोला के ६४ कारखानों में होने वाले एक वर्ष के कुल उत्पादन के बारे में पता किया तो पता चला कि ये दोनों कंपनियाँ एक वर्ष में ७०० करोड़ बोतल तैयार कर के भारत के बाजार में बेच देती हैं। और कम से कम १० रुपये में एक बोतल वो बेचती हैं तो आप जोड़िये कि हमारे देश का ७००० करोड़ रुपया लूटकर वो भारत से ले जाती हैं। और इस ७००० करोड़ रुपये की लूट होती है एक ऐसे पानी को बेच कर जिसमें जहर ही जहर है, एक पैसे की न्यूट्रीशनल वैल्यू नहीं है जिसमें। भारत के कई वैज्ञानिकों ने पेप्सी और कोका कोला पर रिसर्च करके बताया कि इसमें

मिलाते क्या हैं। पेप्सी और कोका कोला वालों से पूछिये तो वो बताते नहीं हैं, कहते हैं कि ये टाप सीक्रेट है, ये बताया नहीं जा सकता। लेकिन आज के युग में किसी भी सीक्रेट को सीक्रेट बना के नहीं रखा जा सकता। तो उन्होंने अध्ययन कर के बताया कि इसमें मिलाते क्या हैं, इसमें मिला होता है - सोडियम मोनो ग्लूटामेट, और वैज्ञानिक कहते हैं कि ये कैंसर करने वाला रसायन है, फिर दूसरा जहर है- पोटैसियम सोरबेट- ये भी कैंसर करने वाला है, तीसरा जहर है- ब्रोमिनेटेड वेजिटेबल आइल (BVO)- ये भी कैंसर करता है। चौथा जहर है- मिथाइल बेन्जीन- ये किडनी को खराब करता है, पाँचवा जहर है- सोडियम बेन्जोईट- ये मूत्र नली का, लीवर का कैंसर करता है, फिर इसमें सबसे खराब जहर है- एंडोसल्फान - ये कीड़े मारने के लिए खेतों में डाला जाता है और ऊपर से होता है- कार्बन डाईऑक्साइड- जो कि बहुत जहरीली गैस है और

जिसको कभी भी शरीर के अन्दर नहीं ले जाना चाहिए और इसीलिए इन कोल्ड ड्रिंक्स को 'कार्बोनेटेड वाटर' कहा जाता है। और इन्ही जहरों से भरे पेय का प्रचार भारत के क्रिकेटर और अभिनेता-अभिनेत्री करते हैं पैसे के लालच में। उन्हें देश और देशवासियों से प्यार होता तो ऐसा कभी नहीं करते।

ज्यादातर लोगों से पूछिये कि 'आप ये सब क्यों पीते हैं ?' तो कहते हैं कि 'ये बहुत अच्छी क्वालिटी का है।' अब पूछिये कि 'अच्छी क्वालिटी का क्यों है' तो कहते हैं कि 'अमेरिका का है'। और ये उत्तर पढ़े-लिखे लोगों के होते हैं। तो ऐसे लोगों को ये जानकारी मैं दे दूँ कि अमेरिका की एक संस्था है FDA (Food and Drug Administration) और भारत में भी ऐसी ही एक संस्था है, उन दोनों के दस्तावेजों के आधार पर मैं बता रहा हूँ कि, अमेरिका में जो पेप्सी और कोका कोला बिकता है और भारत में जो पेप्सी-कोक बिक रहा है, तो भारत में बिकने वाला पेप्सी-कोक, अमेरिका में बिकने वाले पेप्सी-कोक से ४० गुना ज्यादा जहरीला होता है, सुना आपने? ४० गुना, मैं प्रतिशत की बात नहीं कर रहा हूँ। और हमारे शरीर की एक क्षमता होती है जहर को बाहर निकालने की, और उस क्षमता से ४०० गुना ज्यादा जहरीला है, भारत में बिकने

वाला पेप्सी और कोक। ये है पेप्सी-कोक की क्वालिटी, और वैज्ञानिकों का कहना है कि जो ये पेप्सी-कोक पियेगा उनको कैंसर, डाईबिटीज, ओस्टियोपोरोसिस, ओस्टोपिनिया, मोटापा, दाँत गलने जैसी ४८ बीमारियाँ होंगी।

पेप्सी-कोक के बारे में आपको एक और जानकारी देता हूँ- स्वामी रामदेव जी इसे टायलेट क्लीनर कहते हैं, आपने सुना होगा तो वो कोई इसको मजाक में नहीं कहते या उपहास में नहीं कहते हैं, इसके पीछे तथ्य है, तथ्य ये कि टायलेट क्लीनर और पेप्सी-कोक की pH वैल्यू एक ही है। मैं आपको सरल भाषा में समझाने का प्रयास करता हूँ।

pH एक इकाई होती है जो एसिड की मात्रा बताने का काम करती है और उसे मापने के लिए pH मीटर होता है। शुद्ध पानी का pH सामान्यतः ७ होता है और ७ pH को सारी दुनिया में सामान्य माना जाता है, और जब पानी में आप हाईड्रोक्लोरिक एसिड या सल्फ्यूरिक एसिड या फिर नाइट्रिक एसिड या कोई भी एसिड मिलायेंगे तो pH का वैल्यू ६ हो जायेगा, और ज्यादा एसिड मिलायेंगे तो ये मात्रा ५ हो जाएगी, और ज्यादा मिलायेंगे तो ये मात्रा ४ हो जाएगी, ऐसे ही करते-करते ये मात्रा कम होती जाती है । जब पेप्सी-कोक के एसिड का जाँच किया गया तो पता चला कि वो २-४ हैं और जो टायलेट क्लीनर होता है उसका pH और पेप्सी-कोक का pH एक ही है, २-४ का मतलब इतना खराब जहर कि आप टायलेट में डालेंगे तो ये झकाझक सफेद हो जायेगा। इस्तेमाल कर के देखिएगा। जब हमने पेप्सी और कोक के खिलाफ अभियान शुरू किया था तो हम अकेले थे लेकिन आज भारत में ७० संस्थाएँ हैं जो पेप्सी-कोक के खिलाफ अभियान चला रहीं हैं, हम खुश हैं कि इनके बिक्री में कमी आयी है। ये पूरी तरह भारत में बंद हो जाएगी अगर आप इस बात को समझें और खरीदना बन्द करें।

साभार- अन्तर्जाल

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

•**सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके,एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-

•सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) की द्वितीय आवृत्ति छपने में है। कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थ प्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास | भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री | डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

विभिन्न संस्कृतियों में नव वर्ष की परम्परा

कृष्ण कुमार यादव

नव वर्ष की समूचे विश्व में एक समृद्ध परम्परा है। वर्तमान में अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार मनाया जाने वाला नव वर्ष प्रायः सभी देशों द्वारा मनाया जाने वाला एक ऐसा नया साल है जिसे सभी वर्गों, समुदायों द्वारा मान लिया गया है। सर्वप्रथम १५३ ई.पू. में १ जनवरी को वर्ष का शुभारम्भ माना गया एवं ४५ ई.पू. में जब रोम के तानाशाह जूलियस सीजर द्वारा जूलियन कैलेण्डर का शुभारम्भ हुआ, तो यह सिलसिला बरकरार रहा। ऐसा करने के लिए जूलियस सीजर को पिछला साल, यानि, ईसा पूर्व ४६ ई. को ४४५ दिनों का करना पड़ा था। १ जनवरी को नववर्ष मनाने का चलन १५८२ ई० के ग्रेगेरियन कैलेण्डर के आरम्भ के बाद ही बहुतायत में हुआ। दुनिया भर में प्रचलित ग्रेगेरियन कैलेंडर को पोप ग्रेगरी अष्टम ने १५८२ में तैयार किया था। ग्रेगरी ने इसमें लीप ईयर का प्रावधान भी किया था। आजकल इसी पंचांग को सर्वमान्य रूप से नए वर्ष की शुरुआत मान लिया गया है। सारे सरकारी कार्य और लेखा-जोखा इसी के अनुसार संचालित किए जाते हैं।

भिन्न-भिन्न देशों में नव वर्ष मनाने का अंदाज भी अनूठा है।

ब्रिटेन में लोग नए साल का स्वागत आतिथ्य भाव से करते हैं। मान्यता है कि वर्ष का पहला मेहमान उनके लिए ऐश्वर्य व सौभाग्य लेकर आता है। शर्त यह है कि यह मेहमान पुरुष होना चाहिए। उसके लिए तोहफा लाना अनिवार्य होता है। मेहमान मुख्य द्वार से प्रवेश करता है और अपने साथ पारंपरिक तौर पर रसोईघर का सामान, घर के मुखिया के लिए शराब या आग जलाने के लिए कोयला जैसे तोहफे लाता है। वह पीछे के दरवाजे से बाहर जाता है। तोहफे बगैर उसे घर में आने की इजाजत नहीं होती।

डेनमार्क में लोग नए साल के दिन घर की पुरानी प्लेटों को अपने पड़ोसियों, रिश्तेदारों और दोस्तों के घरों के सामने तोड़ते हैं। इसे दोस्ती और आत्मीयता का प्रतीक माना जाता है। समझा जाता है कि जिस भी घर के सामने सबसे ज्यादा टूटी हुई प्लेटें होती हैं, वह सबसे अधिक प्रिय होता है।

जर्मनी में लोग नये साल के स्वागत के लिए ठंडे पानी में पिघला हुआ सीसा डालते हैं। इससे बनने वाली आकृति भविष्य की जानकारी देती है। यानी अगर दिल का आकार बना तो शादी होगी। गोलाकार आकार बना तो साल सौभाग्यशाली रहने वाला है। इसके अलावा नए साल की

पूर्व संध्या पर खाए गए भोजन का कुछ भाग आधी रात तक बचा कर रखा जाता है। मान्यता है कि इससे आने वाले साल में घर में पर्याप्त मात्रा में भोजन सामग्री रहेगी। वहीं **चिली** में मध्यरात्रि के समय शैंपेन भरे गिलास में सोने की अंगूठी रखी जाती है, जो सौभाग्य का प्रतीक समझी जाती है। **फिलीपींस** में नए साल के दिन लोग पोलका डॉट्स (गोल बिन्दुओं) वाले कपड़े पहनते हैं और गोल आकृति का फल खाते हैं। इसे समृद्धि का प्रतीक समझा जाता है। **प्यूर्टो रिको** में नए साल के मौके पर दरवाजे या बालकनी से ठंडा पानी बाहर फेंका जाता है।

जापान में नए साल को ओसोगात्सु कहा जाता है। इस दिन सभी तरह का कारोबार बंद रहता है। बुरी ताकतों को दूर रखने के लिए इस दिन घर के मुख्यद्वार के ऊपर रस्सी बाँधी जाती है। नए साल के आगमन के साथ ही जापानी

जोर-जोर से हँसने लगते है। घड़ी में १२ बजने से पहले १०८ घंटियाँ यह दिखाने के लिए बजाई जाती हैं कि इतनी परेशानियों का सफाया कर दिया गया है। **आस्ट्रेलिया** में नए साल के दिन सार्वजनिक छुट्टी होती है। लोग ३१ दिसम्बर की आधी रात से सीटियों, कार के हॉर्न और चर्च की घंटियाँ बजाना शुरू कर देते हैं और नए साल का स्वागत करते हैं। **दक्षिण अफ्रीका** में नए साल पर चर्च की घंटियाँ बजने के साथ ही लोग बंदूक से गोलियाँ चलाने लगते हैं। **मध्य और दक्षिण अमेरिका** में इस दिन यहाँ के लोग पीले रंग के कपड़े खरीदते हैं, जो सोने (धातु) का प्रतीक है।

पुर्तगाल और स्पेन में लोग नए साल के मौके पर १२ अंगूर खाते हैं। उनका मानना है ये आगामी १२ महीनों में उनके

लिए खुशहाली लाएँगे।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में बात करें तो हमारा देश अनेकता में एकता की परंपरा को सहेजता है। यहाँ हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, पारसी के साथ अनेक धर्म और समुदायों के लोग अपनी-अपनी संस्कृति को निभाते हुए नव वर्ष मनाते हैं। इन सबके अपने अलग-अलग त्योहार और रीति-रिवाज हैं। जिस प्रकार सभी समुदायों के कुछ विशेष पर्व हैं जिन्हें सभी एक साथ मिलकर मनाते हैं, उसी प्रकार प्रत्येक समुदाय के नए वर्ष भी अलग-अलग हैं और सभी एक-दूसरे के पर्वों का सम्मान करते हैं। अन्य पर्वों की तरह हर समुदाय द्वारा नववर्ष भी बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है।

भारतीय संस्कृति में नववर्ष के आरम्भ की पुरानी परम्पराओं में से एक नवसंवत्सर भी है। माना जाता है कि

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव संवत्सर अवश्य मनावें।

इस दिन भगवान ब्रह्मा द्वारा सृष्टि की रचना हुई तथा युगों में प्रथम सतयुग का प्रारंभ हुआ। अतः नववर्ष का प्रारंभ इसी दिन से होता है, और इस समय से ही नए विक्रम संवत्सर का भी आरंभ होता है। हिन्दू नववर्ष 'चैत्र प्रतिपदा' के रूप में मनाया जाता है। इसका प्रारंभ हिन्दी पंचांग के अनुसार चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से होता है। इसी दिन से वासंत्येयी नवरात्र का भी प्रारंभ होता है। हिन्दू नववर्ष का पंचांग विक्रम संवत् से माना जाता है। सूर्योपासना के साथ आरोग्य, समृद्धि और पवित्र आचरण की कामना की जाती है। जैन समुदाय द्वारा नया साल दीपावली के दिन से मनाया जाता है। इसे 'वीर निर्वाण संवत्' कहा जाता है।

मुस्लिम समुदाय में 'हिजरी सन्' के नाम से जाना जाने वाला नया वर्ष मोहर्रम की पहली तारीख से मनाया जाता है। मुस्लिम पंचांग की गणना चाँद के अनुसार होती है। पारसियों द्वारा मनाए जाने वाले नववर्ष 'नवरोज' का प्रारंभ तीन हजार साल पहले हुआ। ऐसा माना जाता है कि इसी दिन फारस के राजा जमशेद ने सिंहासन ग्रहण किया था। उसी दिन से इसे नवरोज कहा जाने लगा। राजा जमशेद ने ही पारसी कैलेंडर की स्थापना की थी। नवरोज को जमशेदी नवरोज भी कहा जाता है। यह १६ अगस्त को मनाया जाता है।

धर्मों से परे विभिन्न प्रांतों में भी नव वर्ष अलग-अलग रूपों में मनाया जाता है। महाराष्ट्रियन परिवारों में चैत्र माह की प्रतिपदा को ही नववर्ष की शुरुआत होना माना जाता है। इस दिन बाँस में नई साड़ी पहनाकर उस पर ताँबे या पीतल के लोटे को रखकर गुड़ी बनाई जाती है और उसकी पूजा की जाती है। गुड़ी को घरों के बाहर लगाया जाता है और सुख संपन्नता की कामना की जाती है। गुड़ी पड़वा, हिन्दू नववर्ष के रूप में भारत भर में मनाया जाता है। इस दिन सूर्य, नीम की पत्तियाँ, अर्घ्य, पूरनपोली, श्रीखंड और ध्वजा पूजन का विशेष महत्व होता है। इस दिन घर-घर में विजय के प्रतीक स्वरूप गुड़ी सजाई जाती है। उसे नवीन वस्त्राभूषण पहनाकर शक्कर से बनी आकृतियों की माला

पहनाई जाती है। पूरनपोली और श्रीखंड का नैवेद्य चढ़ा कर नवदुर्गा, श्रीरामचन्द्र जी एवं राम भक्त हनुमान की विशेष

आराधना की जाती है। इस दिन सुन्दरकांड, रामरक्षास्तोत्र और देवी भगवती के मंत्र जाप का खास महत्व है। ऐसा माना जाता है।

मलयाली समाज में नया वर्ष ओणम से मनाया जाता है। इस दिन प्रतिवर्ष विभिन्न सांस्कृतिक आयोजन किए जाते हैं। ओणम मलयाली माह छिंगम यानी अगस्त और सितंबर के मध्य मनाया जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन राजा बलि अपनी प्रजा से मिलने धरती पर आते हैं। राजा बलि के स्वागत के लिए घरों में फूलों की रंगोली सजाई जाती है और स्वादिष्ट पकवान बनाए जाते हैं। इसी प्रकार तमिल नववर्ष पोंगल से प्रारंभ होता है। पोंगल से ही तमिल माह की पहली तारीख मानी गई है। पोंगल प्रतिवर्ष १४-१५ जनवरी को मनाया जाने वाला बड़ा त्योहार है। पोंगल में सूर्य देव को जो प्रसाद अर्पित किया जाता है उसे पोंगल कहते हैं। चार दिनों का यह त्योहार नई फसल आने की खुशी में मनाया जाता है।

अपनी विशेष संस्कृति से जाने-पहचाने जाने वाले बंग समुदाय का नया वर्ष बैसाख की पहली तिथि को मनाया जाता है। यह पर्व नई फसल की कटाई और नया बही-खाता प्रारम्भ करने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। एक ओर व्यापारी लोग जहाँ नया बही-खाता बंगाली में कहें तो हाल-खाता करते हैं तो दूसरी तरफ अन्य लोग नई फसल के आने की खुशियाँ मनाते हैं। इस दिन कई सांस्कृतिक आयोजन होते हैं और मिठाइयाँ बाँटी जाती हैं। इसी प्रकार पंजाबियों की संस्कृति गीत-संगीत की अनोखी परंपरा और खुशदिल लोगों से सजी है। पंजाबी समुदाय

अपना नववर्ष बैसाखी में मनाते हैं। बैसाखी प्रतिवर्ष १३-१४ अप्रैल को मनाई जाती है। यह त्योहार भी नई फसल आने की खुशी में मनाया जाता है। बैसाखी के अवसर पर नए कपड़े पहने जाने के साथ ही भाँगड़ा और गिद्दा करके खुशियाँ मनाई जाती हैं। गुजराती बंधुओं का नववर्ष दीपावली के दूसरे दिन पड़ने वाली परीवा के दिन खुशी के साथ मनाया जाता है। गुजराती पंचांग भी विक्रम संवत् पर आधारित है। इस दिन तरह-तरह के पकवान बनाए जाते हैं और एक-दूसरे को नववर्ष की शुभकामनाएँ दी जाती हैं।

नववर्ष आज पूरे विश्व में एक समृद्धशाली पर्व का रूप अख्तियार कर चुका है। इस पर्व पर पूजा-अर्चना के अलावा उल्लास और उमंग से भरकर परिजनों व मित्रों से मुलाकात कर उन्हें बधाई देने की परम्परा दुनिया भर में है। हर देश में अपनी संस्कृति के अनुसार नव वर्ष हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। हर कोई इसे यादगार बनाना चाहता है ताकि नये वर्ष में नये संकल्प के साथ नई उर्जा व उत्साह का संचार हो सके।

निदेशक डाक सेवाएँ
इलाहाबाद परिक्षेत्र, इलाहाबाद (उ.प्र.)-२११००१
चलभाष - ०८००४९२८५९९

डर्माडेन्ट क्लीनिक, उदयपुर संभाग में मील का पत्थर

गत ७ वर्षों से त्वचा संबंधी रोगों, विभिन्न कॉस्मेटिक प्रक्रिया के माध्यम से चिकित्सा के क्षेत्र में लोकप्रियता व विश्वसनीयता के शिखर को स्पर्श करने वाले डॉ. प्रशान्त अग्रवाल ने गंजेपन के कारण निराश युवकों में आत्मविश्वास लाने के लिए सर्वप्रथम **बिना चीरफाड़ पद्धति से हेयर ट्रान्सप्लाण्ट ३ वर्ष पूर्व प्रारम्भ किया था।** डॉ. प्रशान्त अग्रवाल ३०० से अधिक हेयर ट्रान्सप्लाण्ट कर चुके हैं। उनके द्वारा ट्रान्सप्लाण्टेड हर केस सफलता की कहानी कह रहा है। दिनांक ३० नवम्बर २०१४ को डर्माडेन्ट क्लीनिक का विस्तार करते हुए मीरा नगर, शोभागपुरा में अपना भव्य, वातानुकूलित, अन्इन्टरप्टेड इलेक्ट्रीसिटी, मुफ्त वाई-फाई सुविधा सहित क्लीनिक का उद्घाटन किया है। डॉ. प्रशान्त न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष एवं सत्यार्थ सौरभ के सम्पादक श्री अशोक आर्य के सुपुत्र हैं। विरासत में अपने पूज्य पितामह आचार्य प्रेमभिक्षु जी से प्राप्त वैदिक संस्कारों का ही प्रभाव है कि शुभारम्भ का कार्य विधिवत् यज्ञ के साथ हुआ। और जब उद्घाटन किनसे कराया जाय यह प्रश्न आया तो डॉ. प्रशान्त ने बेझिझक यह उत्तरदायित्व अपने माता-पिता को दिया। डर्माडेन्ट क्लीनिक में न केवल त्वचा की वरन् दाँतो की सभी प्रकार की चिकित्सा उपलब्ध है। शहर की जानी-मानी डेन्टल सर्जन डॉ. प्रशान्त की सहधर्मिणी डॉ. प्रिया अग्रवाल ने नये भवन में दन्त रोग की समस्त समस्याओं के समाधान के लिए सेवाओं में विस्तार किया है। आर्थोट्रीटमेन्ट और इम्प्लान्ट की सुविधा भी उपलब्ध है। डर्माडेन्ट क्लीनिक में डर्मेटोलॉजी, कॉस्मेटोलॉजी एवं **(Asmi Food Testing Laboratory) शुद्धता की जाँच के लिए खाद्य पदार्थों के विश्लेषण की सुविधा श्री अशोक आर्य, पूर्व फूड एनेलिस्ट, राजस्थान सरकार के निर्देशन में उपलब्ध है।**

- भवानीदास आर्य, मंत्री (न्यास)

प्रजापति और मानव

आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय

दोनों में रूप प्रतिरूप या बिम्ब-प्रतिबिम्ब का सम्बन्ध है। पुरुष प्रजापति की सच्ची प्रतिमा है, इसका यह अर्थ भी है कि त्रिपुरुष पुरुष है, उसी प्रकार मनुष्य भी है। त्रिपुरुष पुरुष का तात्पर्य- प्रजापति नामक संस्था है। जिसका निर्माण अव्यय, अक्षर और क्षर इन तत्वों की समष्टि के रूप में होता है। इनमें से अव्यय दोनों का आलम्बन या प्रतिष्ठा रूप धरातल है। अक्षर निमित्त है और क्षर उपादान है। अव्यय प्रजापति से मन, अक्षर से प्राण और क्षर से शरीर भाग का निर्माण होता है। इस प्रकार जो प्रजापति है वही पुरुष है और पुरुष को प्राजापत्य ग्रहण सर्वथा समीचीन है।

वैदिक दृष्टि के अनुसार पुरुष प्रजापति के निकटतम उसकी साक्षात् प्रतिमा है। सहस्रात्मा प्रजापति का जो केन्द्र था, उसी की परम्परा में पुरुष-प्रजापति के केन्द्र का भी विकास होता है। जो सहस्र के केन्द्र की महिमा थी, वही पुरुष के केन्द्र की भी। इसलिए कहा जाता है कि **'योऽसावादित्येपुरुषः सो सा वहम्।'** जो सूर्य में पुरुष है, वही मानव में है। वैदिक भाषा में केन्द्र को ही हृदय कहते हैं। केन्द्र को ही ऊर्ध्व नाभि आदि नामों से व्यवहृत करते हैं। केन्द्र ऊर्ध्व और उसकी परिधि अधः है। चक्र की नाभि उसका केन्द्र और उसकी नेमि उसका बाह्य या महिमा भाग है। केन्द्र से चारों ओर रश्मियों का वितान होता है। केन्द्र को उक्थ भी कहते हैं क्योंकि उस केन्द्र से चारों ओर रश्मियाँ उत्पन्न होतीं और फैलती हैं। इन रश्मियों को उक्थ की सापेक्षता से अर्क कहा जाता है। जिस प्रकार सूर्य से सहस्रों रश्मियाँ चारों ओर फैलती हैं और फिर एक-एक से सहस्र-सहस्र होकर बिखर जाती हैं, यहाँ तक कि तनिक सा स्थान उनसे विरहित या शून्य नहीं रह जाता और उनकी एक चादर जैसी सारे विश्व में फैल जाती है वैसे ही पुरुष के केन्द्र या उक्थ से अर्क या रश्मियों का विकास होता हैं। **'सहस्रधा महिमानः सहस्रम्'** अर्थात् केन्द्र की महिमा सहस्र रूप में व्यक्त होती है। उसकी रश्मियाँ सहस्र-सहस्र रूप में बँट जाती है।

जहाँ केन्द्र और परिधि की संस्था है, वहाँ सर्वत्र यही वैज्ञानिक नियम कार्य करता है। इस प्रकार जो पुरुष का आत्म केन्द्र हृदय है, वह विश्वात्मा सहस्र या प्रजापति का ही अत्यन्त विलक्षण या रहस्यमय प्रतिबिम्ब है। साढ़े तीन हाथ के शरीर में परिमित होते हुए भी त्रिविक्रम विष्णु के समान विराट् है। **ईश्वरः सर्वभूतेषु.....** इसी तत्व की व्याख्या है। वैदिक दृष्टिकोण में सन्देह और अनास्था का स्थान ही नहीं है। यहाँ तो पूर्ण पुरुष है जो समस्त विश्व में भरा हुआ है। वही पुरुष के केन्द्र या हृदय में भी प्रकट हो रहा है। वह पुरुष वामन भी कहा जाता है। विराट् प्राण की अपेक्षा सचमुच वह वामन है। यह जो मानव के केन्द्र या हृदय में वामन मूर्ति भगवान् है उसे ही व्यानप्राण भी कहा जाता है। जो प्राण और अपान दोनों को संचालित करता है और जीवन देता है। इस व्यान प्राण की शक्ति बड़ी दुर्धुर्ष है। इसके ऊपर सौर जगत् के प्राण और पार्थिव जगत् के अपान इन दोनों का घर्षण या आक्रमण निरन्तर होता रहता है। किन्तु वामन मूर्ति विष्णु विराट् का प्रतीक है। यही किसी तरह पराभूत नहीं होता। यदि वह वामन या मध्य प्राण हमारे केन्द्र में न हो तो सौर और पार्थिव प्राण अपान का प्रचण्ड धक्का न जाने हमारा किस प्रकार विस्रंसन कर डाले। उपनिषद् में कहा है-

न प्राणेन नापानेन भर्त्यो जीवति कश्चन।
इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन्नेतावुपर्णश्रतौ।।

जिस केन्द्र या मध्यस्थ प्राण से उर्ध्व गति प्राण और अधोगति प्राण अपान दोनों की ग्रन्थि है। उसी की पारिभाषिक संज्ञा व्यान है। उसी को सांकेतिक भाषा में इतर कहा गया है। प्राण और अपान दोनों उसी के आश्रय से संचालित होते हैं।

'मध्ये वामनासीनं सर्वे देवा उपासते' यह केन्द्र या मध्य प्राण या वामन इतना सशक्त और बलिष्ठ है कि सृष्टि के सब देवता इसकी उपासना करते हैं। इसी के दृढ़ ग्रन्थि बन्धन या बल से इतर सब देवों के बल सन्तुलित होते हैं। यह वामनरूपी मध्य प्राण ही समस्त विश्व में अपनी रश्मियों से फैलकर विराट् या वैष्णव रूप धारण करता है। विष्णु रूप महाप्राण ही हृदयस्थ वामन के रूप में सब प्राणियों के रूप में प्रतिष्ठित है। इसी के लिए कहा जाता हैः-

स हि वैष्णवो यद् वामनः। (श. ५/२/५४)

यही अविचाली सहज परिपूर्ण और स्वस्थभाव है। जो मानव

आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी आर्य जगत् में किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। वेद, उपनिषद्, दर्शन एवं व्याकरण का तलस्पर्शी ज्ञान व गहन चिन्तन से वैदिक विज्ञान को उद्घाटित करने तथा धारा प्रवाह रूप में श्रोताओं तक मन्त्रमुग्ध कर देने वाली शैली में सम्प्रेषण के लिए आचार्य जी जाने जाते हैं। प्रस्तुत लेख उनके गहन चिन्तन का परिचायक है।

– सम्पादक

इस केन्द्रस्थ भाव में स्थिर रहता है, वही निष्ठावान् मानव है। जिसका केन्द्र विचाली है, कभी कुछ कभी कुछ सोचता और आचरण करता है, वही भावुक मानव है। केन्द्र स्थिर हुए बिना परिधि या महिमामण्डल शुद्ध बन ही नहीं सकता।

आत्मा, बुद्धि, मन और शरीर इन चारों विभूतियों में आत्मा और बुद्धि की अनुगत स्थिति का नाम निष्ठा है। मन और शरीर की अनुगत स्थिति का नाम भावुकता है। प्रायः निर्बल संकल्प विकल्प वाले मनुष्य मन और शरीर नुगत रहते हुए अनेक व्यापारों में प्रवृत्त होते हैं। जो बुद्धि अपने मन को वश में कर लेती है उसी को वैदिक भाषा में मनीषा कहते हैं। जिस अविचाली अटल बुद्धि में पर्वत के समान ध्रुव की अटल निष्ठा होती है; उसे ही 'धिषणा' कहते हैं। वैदिक भाषा में इसी को अश्मारवण प्राण के कारण इसे 'धिषणा पार्वतेयी' कहा जाता है।

आजकल मानव सर्वथा कुण्ठित क्यों है? उसका मानवोचित समाधान यही है कि वह आत्मकेन्द्र की रक्षा नहीं करता अतः उसका अन्तःकरण पिब्दमान या पिलपिला रहता है। दृढ़ कर्म और विचारों में सक्षम नहीं रह पाता।

उसमें धर्मभीरुता तो होती है, किन्तु आत्मसत्य रूपी धर्मात्मकता नहीं होती। आत्मनिष्ठा पर अध्यारूढ़ होना सच्ची श्रद्धा है। वर्तमान मानवों में इसका अभाव हो गया है। अतएव उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास नही हो पाता। मनोगर्भिता बुद्धि से प्रवृत्त होने वाला मानव ही निष्ठावान् मानव है। ऐसे मानव का स्वयं केन्द्र विकसित होता है। केन्द्र बिन्दु का नाम मनु है। आत्मबीज का नाम ही मनु कहा जाता है। वह मनुतत्त्व जिस मानव में विकसित नहीं है उसका होना भी व्यर्थ है, श्रद्धा तो मनु की पत्नी है अर्थात् मनु के लिए अशिति या भोग्य है। जिस समय आत्मकेन्द्र मनु तेजस्वी होता है उस समय वह अपने ही आप्यायन या सम्वर्द्धन के लिए बाहर से श्रद्धा रूपी अशिति या भोग्य प्राप्त करता है। मनु श्रद्धा का भोग करते ही पूर्ण बनते हैं और मनु और श्रद्धा की एक साथ परिपूर्ण अभिव्यक्ति ही सत्य का स्वरूप है। अर्थात् सर्वप्रथम मानव का आत्मकेन्द्र उद्बुद्ध होना चाहिए। उसमें सौर प्राण या इन्द्रात्मक ज्योति का पूर्ण प्रकाश आना चाहिए।

तभी वह सच्चा मनु पुत्र या मानव बनता है और आत्मकेन्द्र के उद्बुद्ध होने के बाद आत्मबीज के विकास के लिए वह सारे विश्व से अपने लिए ग्राह्य अंश स्वीकार करता हुआ बढ़ता है। यही श्रद्धा द्वारा मनु का आप्यायन है। वैदिक भाषा में **'अशीतिर्निर्महदुक्थमाप्यायते'**।

केन्द्र या मनु यह दुक्थ है। उस महदुक्थ की तृप्ति या आप्यायन श्रद्धा रूपी अशीति से होता है। जो उसे चारों ओर से प्राप्त होती है। एक बात को कई रीति से कह दिया जाता है। महदुक्थ और अशीति, मनु और श्रद्धा इन दोनों की एक साथ अभिव्यक्ति का नाम ही सत्य प्रतिष्ठातत्त्व है।

'सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितम्' स्वयं सत्य प्रतिष्ठित होता है।

२४३, अरावली अपार्टमेन्ट
प्रथम तल, अलकनन्दा
नई दिल्ली- ११००१९

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आशाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रहलादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमत्त सूद, पाण्डाघाट, श्रीमती सुमन सूद, सोलन, माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़

BIS Theory- Earthquacks are caused by excessive killing of animals

शाकाहारी बनो-इन्सान बनो

- Dr. Madan Mohan Bajaj

{A New Approach by M.M. Bajaj, Ibrahim and Vijayraj Singh; H. B. Prakashan, Indore;} This book is a forceful plea to stop slaughter of animals, birds, and (even) fish because it will avert earthquakes. It is difficult to say what prompted the authors – all physicists of fame and high learning – to enter the rough and tumble of geology and that, too, of earthquakes. But, then, science has its own angularities. **After all, the high priest of modern science, Albert Einstein, also meddled with the science of geology by propagating EPW (Einsteinian Pain Waves) theory.**

Whatever one's predilections, it has to be conceded that the idea is unique. And novelty is not the only argument in favour of the book which is actually based on paper(s) read by the authors. The BIS (Bajaj-Ibrahim-Singh) Theory is claimed to be a further development on EPW of Einstein. The book claims it is possible to forecast earthquakes which are caused by excessive killing of animals. Now either it is all based on 'real' correlations or is a set of spurious ones. The answer would depend upon whether, and a priori, one is willing to subscribe to the theory whose validity is all but proven so far. And to that extent, the book is truly novel and hence absolutely and eminently readable. After all, science still does not have even the modicum of an answer as to why the earthquakes happen and how they can be predicted with reasonable accuracy. **The book certainly fills the gaps in the science of seismology which is still a nascent science.**

The argument, otherwise highly technical and full of scientific jargon, given so lucidly and simply in the

abstract of the book is quite unique to say the least. It is based on the, "reports received" from different parts of the world that **several earthquakes have the history of millions of animals being butchered in or near the high risk seismic zones.** Hence the suspicion and the scientific inquiry that organizing the butchering of animals in the abattoirs worldwide has something to do with the quakes.

The book claims to have studied the complex role of nociceptive waves (or the waves generated by the immense noise by the animals on the verge of being butchered) in shear-wave splitting which is related to seismic anisotropy. This splitting is associated with the cracks in the crust aligned by stress. The origin of earthquakes due to the interaction of nociception waves with gravity waves is critically examined in the book. An earthquake of 8 Richter occurs only when the resonant frequency is extremely high. Low frequency resonances lead to earthquakes of 0.1 to 0.2 Richter. Low frequency resonances are hardly felt or realized by the ordinary people. High frequency resonances (originating due to the slaughter of millions of animals daily for years together) lead to powerful singularities with the gravity waves.

Dying Animals Cause Acoustic Anisotropy

Now the point which the authors have tried to make is that acoustic anisotropy leads to a very strong anisotropic stress on a rock. **The daily butchering of thousands of animals continually for several years generates acoustic anisotropy due to Einsteinian Pain Waves (EPW) emitted by dying animals.** And the accumulated acoustic anisotropy is found to be related with the stress history of rocks.

The book claims that **since the EPW travel a great distance with time, abattoirs of one country may lead to havoc in another country.** But then comes a final "warning" from the scientists laced with spirituality: '...we should close down all the abattoirs (visible and hidden) of the world. Our environmental problems are responsible for the mega-event of earthquakes. ' If this had come from a religious saint, people would have taken it at face value. But, coming from scientists of some fame, the approach needs a careful analysis sans religiosity which is a tall order given the Indian context.

The central theme of the book that shear wave splitting occurs possibly due to aligned fluid-filled inclusions and abattoirs, is open to question, and needs a further in-depth study, which the authors claimed to have done with a promise that a fresh book of over 600 pages is coming out shortly on this

"Professor Bajaj is from the Delhi University's department of physics and astrophysics. He has spent 14 years investigating the effects of animal slaughter on earthquakes, air crashes and other disasters. "The killing of animals causes natural and manmade disasters," Bajaj said. "But, since the cow is so useful to human beings, its slaughter causes exceptional seismic activity. The cries of the animals go down to the earth through Einsteinian pain waves."

very aspect. However, the authors have been fair to mention, if not examine in the introductory part, all existing hypotheses on the subject though finally, they settle down on their own hypothesis of large-scale abattoir activity being the causative agents for major earthquakes. In chapter 2 they move to the complex theory which is a set of mathematical formulae which may not be of much interest to a person not properly initiated in mathematical and statistical mumbo jumbo.

Latur Ealthquake Explained

It is "Experimental Aspects" in chapter 3 which is absolutely revolutionary and candid. After preliminary observation as to how the nociception waves (EPW) interact with the earth's natural rhythmatic vibrations and lead to responses which are extremely powerful (of the order of 10 40 MW) causing crack density (CD) which is directly proportional to EPW – itself a result of 'animals butchered daily' the authors come straight to the most recent of the Indian calamities– the Latur (Khillari) earthquake. And from here it is a non-stop journey to earthquakes at various places. Indian earthquakes of Utter Kashi, Assam follow the Latur tragedy. Then comes America where the earthquakes of North ridge (1994), Long Beach (California – 1933),

सम्पादक को दो वर्ष पूर्व आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक के आश्रम (भागल-भीम, भीनमाल) में एक कार्यक्रम के अवसर पर डॉ. बजाज से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इस उम्र में भी डॉ. बजाज जिस मुस्तैदी से अपने मिशन में लगे हैं वह प्रेरक तथा सराहनीय है। उनकी एक पुस्तक "understanding Earthquakes" की समीक्षा यहाँ पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है।

-संपादक

Landers (California -1992), San Francisco (1906), New Madrid (Missouri – 1811-12) have been mentioned. Russia is next where Neftegorsk (1995) finds a major mention. Kanto (1923), Nobi (1891), Kita-Tango. (1927), Sankiru Tsunami (1933), Shizuoka (1935), Tonankal (1944), Nankai (1948), Fukui (1948), Off-Tokachi (1952), Kjta-Mino (1961), Nigata (1964), Off-Tokachi (1968), Kobe (1995) – all of Japan – have also been described not so much as a part of scientific inquiry but to demonstrate the pattern and familiarity of the authors with what they are talking about.

Some of the data accumulated from aforementioned places, juxtaposed with the famous study by Nemichand has been put to productive use by the authors to make a comprehensive table of strong earthquakes of the 20th century and the date from 3,937 ,, officially recognized major abattoirs" in different parts of India to establish further the hypothesis propounded that earthquakes are caused by large scale animal slaughter. Some of the obiter dicta by the authors are certainly open to serious question.

Recent supplementary commentary of one of the authors, Dr. Vijay Ray Singh:

Bisology is a new subject which has developed recently. It deals with the Breakdown of Integrated Systems and indiscriminate slaughtering or Brutal and Intense Slaughtering.

Basically it is the subject which has originated from the Bajaj-Ibrahim-Singh effect, which was reported by us for the first time in Suzdal (Russia) in 1995. Some noted scholars have written whole chapters on Biology in their books. The discovery of the BIS effect was so sensational that an Indian Journal brought out a special issue devoted to the subject. Several young scholars have studied this subject in their Ph.D. theses submitted to different universities. We have been extremely fortunate to have the blessings of a great teacher, Prof. Nemi Chand-Jain in the proliferation of our scientific ideas regarding vegetarianism and the direction in which true science should move.

गणतंत्र दिवस २०१५

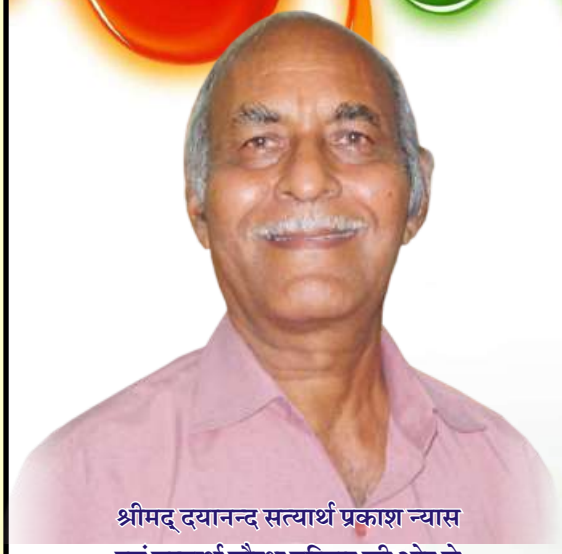

फिर आया गणतंत्र दिवस इस वर्ष नवल आह्वान करें,
आओ जन-जन के मन में अब राष्ट्र प्रेम का भाव भरें।
आज अहम् को करें किनारे और स्वयं से बात करें,
करें देशहित में कुछ चिंतन करना होगा मन का मंथन।
पैंसठ साल अब बीत गए भारत जबसे गणतंत्र बना,
आओ सोच विचार करें अब कितना तंत्र, स्वतंत्र बना ?
उन्नति पथ पर हुआ अग्रसर भारत ने जब आजादी पाई,
कुछ तो अब भी शेष रह गया आजादी पूरी ना मिल पाई।
आओ खुद को देश से जोड़ें देश नहीं तो हम क्या हैं ?
राष्ट्र प्रेम में जो न समर्पित फिर हम भारतवासी क्या हैं ?
दुःख दरिद्र मिटाए इसके आतंक के साये का नाश करें,
भ्रष्ट-तंत्र के रखवालों से अब सत्ता को आजाद करें।
जन-जन से ही मिलकर बनता प्रजातंत्र का ये नारा है,
तो फिर हमने ही क्यों इसको भूल, देश को दुत्कारा है ?
नए जोश से ओत-प्रोत हो छब्बीस जनवरी खूब मनाई,
अब खेनी है देश की नौका जाग युवा, अब बारी आई।
अब पुनः विचार जरूरी है कुछ नव निर्माण जरूरी है,
जन मानस को आज जगा कर फूँकना प्राण जरूरी है।
उठो ! आज फिर इस अवसर पर पुनः एक संकल्प करें,
जब तक देश खुशहाल न होवे तब तक ना विश्राम करें।

साभार- विनायक वास्तु टाईम्स

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से

६६वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

डॉ. अमृतलाल तापड़िया
संयुक्त मंत्री- न्यास

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थ प्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) अवश्य खरीदें।

मात्र ४०₹

प्राप्ति स्थल
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाबबाग उदयपुर - ३१३००१

सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएँ-

- धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
- पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
- मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।
- मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
- सुन्दर गेटअप "५.६X९.०" पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी।
आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०

३५०० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

२०१५ का शानदार कैलेण्डर

न्यास द्वारा प्रकाशित १०० रु. मूल्य का, शानदार कैलेण्डर (डेढ़ वर्षीय, सम्पूर्ण ऋषि-गाथा को चित्रित करने वाला) ५० प्रतिशत डिस्काउन्ट के साथ मात्र ५० रुपये (मय २० रु. पैकिंग व डाक व्यय) में उपलब्ध। यह शानदार कैलेण्डर न्यास संरक्षक डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (शिकागोलैण्ड) के सौजन्य से तैयार किया गया है।

वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्य में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

गणितशास्त्र का मूल वेद

प्रो.ज्वलन्त कुमार शास्त्री

यजुर्वेद में कहा गया है कि जल के विविध रूपों का लेखा-जोखा रखने के लिए 'गणक' की सहायता ली जानी चाहिए {यादसे शाबल्यां ग्रामण्यं गणकम (यजुर्वेद ३०।२०)।} 'यादस्' शब्द जलवाचक है (निघण्टु १।१२)। ऋग्वेद (३।३६।७) 'समुद्रेण सिन्धवो यादमाना में 'याद्' धातु का बहने अर्थ में प्रयोग प्राप्त है। 'गणकम्' शब्द से गणितशास्त्र में निष्णात् विद्वानों की सूचना प्राप्त होती है। शास्त्र के रूप में 'गणित' का प्राचीन प्रयोग 'लगध' ऋषि के 'वेदांग ज्योतिष' नामक ग्रन्थ में पाया जाता है-

'यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वत् वेदांगशास्त्राणां गणितं मूर्धनि वर्त्तते।।'

यजुर्वेद में ही खगोलशास्त्र (ज्योतिष) के विद्वान् के लिए 'नक्षत्रदर्श' का प्रयोग मिलता है- 'प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्शम (यजुर्वेद ३०।१०)। छान्दोग्य उपनिषद् (७।१।२) में गणित के लिए 'राशि विद्या' तथा ज्योतिष के लिए 'नक्षत्र विद्या' नाम का प्रयोग किया गया है।

यजुर्वेद में वेदि में चुनी गई ईंटों की संख्या तथा उतनी ही गायों की प्रार्थित संख्या के लिए १ से प्रारम्भ करके सबसे बड़ी परार्ध संख्या का प्रयोग किया गया है- एक, दश, शत, सहस्र, अयुत, नियुत प्रयुत, अर्बुद, न्यर्बुद, समुद्र, मध्य, अन्त, परार्ध तक संख्या का प्रयोग यजुर्वेद (१७।२) में है। इन संख्याओं में अयुत, नियुत, प्रयुत, अर्बुद, न्यर्बुद, समुद्र, मध्य,अन्त और परार्ध शब्द क्रमशः दस हजार (१००००),एक लाख(१००००००),दस लाख (१०००००००), एक करोड़ (१००००००००), एक अरब (१०००००००००), दस अरब (१०००००००००), एक खरब (१००००००००००), दस खरब (१०००००००००००) के वाचक हैं। बाद में बौद्ध ग्रन्थ 'ललित विस्तार'(ई.पूर्व १०० में विरचित) में एक लाख के लिए 'लक्ष' तथा वाल्मीकीय रामायण में एक करोड़ के लिए 'कोटि' शब्द के प्रयोग के कारण महान् गणितज्ञ आर्यभट्ट ने 'अर्बुद' का अर्थ दस करोड़ किया। परवर्ती गणित के आचार्य श्रीधराचार्य ने 'नियुत' के स्थान पर 'लक्ष' का प्रयोग किया। गणित की संख्या पदावली में लक्ष तथा कोटि का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। प्राकृत में ये शब्द 'लाख' तथा 'करोड़' के रूप में प्रयुक्त किए जाने लगे तथा अर्बुद से निःसृत अरब शब्द एक अरब का वाचक बन गया। अंग्रेजी भाषा में प्रयुक्त Lac को 'लक्ष' से तथा Crore को कोटि शब्द से निःसृत माना जाता है। (दृष्टव्य- oxford English Dictionary में संबधित शब्द)। अंग्रेजी भाषा में हजार के लिए Thousand शब्द से आगे संख्या नहीं है। मिलियन बिलियन्स आदि शब्दों से प्रकट की जाती है। वेद में शून्य(०) का प्रयोग उपलब्ध है। 'शून्यैषी निर्ऋते याजगन्धोत्तिष्ठराते प्र पत मेह रंस्थाः।'(अथर्ववेद १४।२।१६) 'शून्येष' का प्रतिरूप ग्रीक में केन्योस् ;Denyos) प्राप्त होता है। अरबी भाषा के सिफ्र शब्द के द्वारा शून्य के 'खाली' अर्थ का अरबी अनुवाद किया गया है। इस 'सिफ्र' से इंग्लिश का Zero शब्द विकसित है। पूरण अर्थ में 'म' प्रत्यय प्रचलित है। संस्कृत के 'पंचम' 'अष्टम' 'नवम' का प्रयोग हिन्दी भाषा में भी होता है। वेदों में पूरण अर्थ को प्रकट करने के लिए 'म' प्रत्यय के साथ 'थ' प्रत्यय भी प्रचलित रहा है। ऋग्वेद में 'सप्तन्' शब्द से 'थ' प्रत्यय के द्वारा 'सप्थः' का (सरस्वती सप्तथी सिन्धुमाता(ऋग्वेद ७।३६।६) तथा काठक संहिता में (६।३१) पंचथः का प्रयोग है। अंग्रेजी भाषा में Fifth, Sixth, Seventh आदि प्रयोग वैदिक प्रत्यय 'थ' का स्मरण कराते हैं। 'म' प्रत्ययान्त 'पंचम' तथा 'सप्तम' की तुलना पहलवी penjum तथा फारसी के haptum से की जा सकती है। १० की संख्या के लिए 'दश' का प्रयोग वेदों में है। यास्क ने 'दश' का निर्वचन करते हुए लिखा है- 'दश दस्ता (निरुक्त ३।१०)। अर्थात् दस नाम इसलिए है क्योंकि इस संख्या तक संख्या लेखन के लिए अंक परिपूर्ण हो जाते हैं। इसके पश्चात् किसी भी बड़ी से बड़ी संख्या लेखन के लिए इन्हीं अंकों की पुनरावृत्ति की जाती है। (दशन् ten is traced to be दस् to be exhausted, so called because after ten the numbers are generally only the repetitions of the previous number- The etymologies of yaska, page 24)

यजुर्वेद के एक मन्त्र में 'एकादश', त्रयोदश आदि विषम

संख्याओं का क्रमशः उल्लेख प्राप्त है (यजुर्वेद १८।२४)। संस्कृत की संख्यामाला प्रायः इस पद्धति का अनुसरण करके बनाई गई है। अंग्रेजी में भी

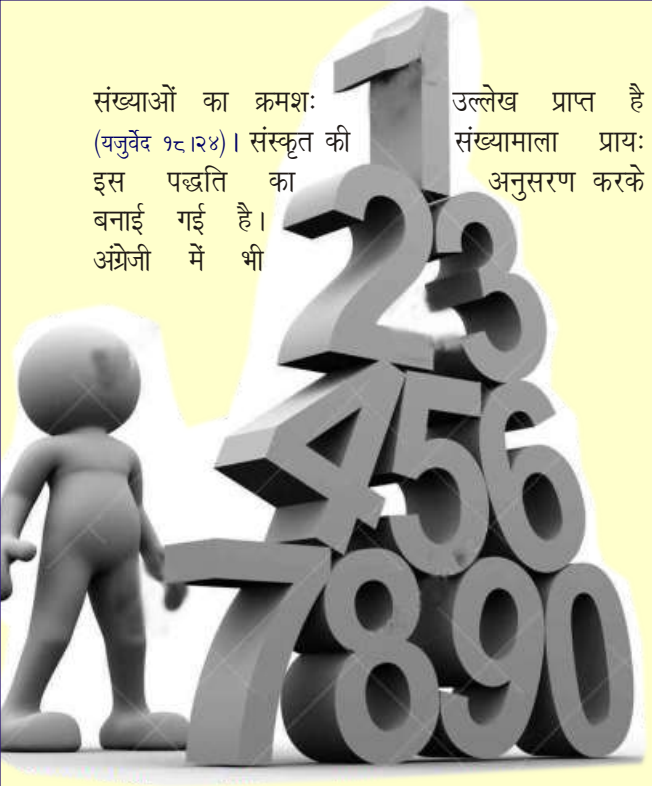

Fifteen, Sixteen आदि शब्द इसी रीति से बनाये गये हैं। नवपूर्व संख्याओं के लिए दो प्रकार के प्रयोग वेदों में मिलते हैं। प्रथम प्रकार नवविंशति, नवाशीति नवनवती शब्द २९ (उनतीस), ८९ (नवासी) ९९ (निन्यानवे) के अर्थ में आते हैं। इनमें नवासी तथा निन्यानवे की रचना नवाशीति तथा नवनवती की रीति पर आधारित है। किन्तु अंग्रेजी में Twenty nine, Eighty nine, Ninty nine के प्रयोग का आधार ऋग्वेद के **'जघान नवतीर्नव'** का प्रयोग है जहाँ दशनवगुणित संख्या पहले तथा नव का प्रयोग बाद में किया गया है। किन्तु हिन्दी में उन्नीस और उनतीस आदि शब्दों के प्रयोग का आधार दूसरा है। इस प्रकार का प्रयोग 'ऊन' शब्द के द्वारा विकसित किया गया है। वेद में पूर्ण के विपरीत न्यून अर्थ में 'ऊन' का प्रयोग प्राप्त है। इसके आधार पर एकोनविंशति (एक कम (न्यून) बीस) जैसे प्रयोग भी वेद में वर्तमान हैं। इसका अनुसरण करते हुए हिन्दी में उन्नीस, उनतीस, उनतालीस, उनचास, उनसठ जैसे शब्द प्रयोग विकसित हुए हैं। इस प्रकार गणित की संख्याओं को विश्व में सर्वत्र प्रसारित करने में वेद, वैदिक साहित्य, तथा संस्कृत भाषा के साथ ही भारतवर्ष का भी योगदान विश्वविदित है। अतः अरबी भाषा के विद्वानों ने अर्थात् अरब निवासियों ने अंकों को 'हिन्दसाँ' नाम देकर भारत के प्रति कृतज्ञता प्रकट की है।

एसोसियेट प्रोफेसर तथा अध्यक्ष
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग
रणवीर रणंजय महाविद्यालय,
अमेठी(उत्तरप्रदेश)

सत्यार्थप्रकाश पहेली-११

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थ प्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए (द्वितीय समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

		१ न		२	ता			३ उ		३ म
४ दु			५ शु			६ गु		का	६	क
७	जा		८	द	८ क		व्य		९	९ च

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. सत्यार्थ प्रकाश द्वितीय समुल्लास में कितने उत्तम शिक्षक बताए गये हैं?
२. किससे सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है?
३. बालकों को माता सदा कैसी शिक्षा करे?
४. कौन-सा पदार्थ है जिसके सेवन से रजस् वीर्य्य दोष रहित हो जाता है?
५. जन्म के पश्चात् सन्तान व उसकी माता को किस प्रकार के वायु में रक्खें?
६. सन्तान के जन्म होने तक माता कैसे द्रव्यों का सेवन करे?
७. सन्तान को किनसे भाषण करने व उनके पास बैठने की शिक्षा करें?
८. माता-पिता गर्भाधान से पूर्व किन पदार्थों का सेवन छोड़ दें?
९. सन्तान कितने वर्ष की हो जाए जब उन्हें देवनागरी तथा अन्य देशीय भाषा के अक्षरों का अभ्यास करावें?

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- "अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ" एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ फरवरी २०१५

हम सब प्राणी एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें

मनमोहन कुमार आर्य

मित्रता दो व्यक्तियों का परस्पर एक मधुरता से पूर्ण सम्बन्ध होता है। यह सम्बन्ध कुछ इस प्रकार का होता है कि जब दोनों मिलते हैं तो अपने सुख-दुःख व अन्य सभी बातें एक-दूसरे को बताते हैं। मित्रों के सुख व दुःख का एक दूसरे को पता होता है। कोई किसी से कुछ छिपाता नहीं है। किसी भी बात को छिपाना मित्रता के धर्म के विपरीत होता है। अन्यों से पता लगने पर दूसरे मित्र को दुःख होता है। किसी भी प्रकार का यदि किसी एक पर संकट आता है तो दूसरा मित्र अपने संकट ग्रस्त मित्र की हर प्रकार की सहायता करता है। हमारा प्रत्यक्ष ज्ञान पर आधारित एक अनुभव है। एक सम्पन्न युवा व्यक्ति थे। वह अपने आर्थिक दृष्टि से कमजोर मित्र को आवासीय भूखण्ड खरीदने के लिए प्रेरित करते थे। एक बार भाव-विभोर होकर उन्होंने कहा कि भूखण्ड तुम खरीद लो, भवन मैं बनवा दूँगा। कुछ ही दिनों बाद एक सड़क दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई। यह घटना मित्र की भावनाएँ कैसी होती हैं, उसका एक उदाहरण है। एक दूसरा उदाहरण भी हमारे प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित है। एक व्यक्ति की पत्नी की तबियत अचानक बिगड़ गई। छुट्टी का दिन था। डाक्टर ने तत्काल वृहद् व जटिल ऑपरेशन कराने का परामर्श दिया। उस व्यक्ति के पास पैसे नहीं थे। उनके एक अन्य मित्र एक दम से सामने आये और सारी व्यवस्था कर दी। बाद में दोनों के बीच धन का लेन-देन हो गया। यदि उस समय उनको सहायता न मिलती तो परिणाम सामने था। प्राणों का संकट समक्ष था पर उस मित्र की सहायता ने उसे टाल दिया। यह भी अनुभव है कि विपरीत परिस्थितियों व आवास-निर्माण में अनेक निकट मित्रों ने बिना कहे ही आर्थिक सहायता का प्रस्ताव किया। कुछ ने मना करने पर भी सहायता की। इस प्रकार का भाव सभी मित्रों में देखा जाता है। मित्रता प्रायः समान गुणों वाले दो व्यक्तियों में होती है जिनकी आयु भी लगभग समान व कुछ कम-ज्यादा होती है। दो मित्र वह होते हैं जिनके हृदय परस्पर जुड़े हुए होते हैं। जिस या जिन-जिन से हमारी मित्रता होती है उनके प्रति हृदय में एक विशेष प्रकार का आदर, प्रेम, सहयोग की भावना, कल्याण की इच्छा व उन्हें सुख पहुँचाने की भावना होती है। गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन को सखा के नाम से सम्बोधित किया है। सखा शब्द भी मित्र का ही पर्यायवाची शब्द है। अर्जुन से मित्रता के सम्बन्ध होने के कारण श्री कृष्ण ने महाभारत के युद्ध में अर्जुन की सहायता की। यदि महाभारत पर दृष्टिपात करें तो हम देखते हैं कि श्री कृष्ण की दुर्योधन या उसके सहयोगियों से अपनी कोई निजी शत्रुता नहीं थी। यह युद्ध सत्य व असत्य के बीच युद्ध था। श्री कृष्ण ने इसमें सत्य के पक्ष का साथ दिया। कृष्ण व अर्जुन के बीच दोस्ती से लगता है कि मित्रता एक ऐसा सम्बन्ध होता है कि जहाँ मित्र पर विपदा आने पर उसका मित्र उसकी पूरी सहायता करता है और उसका प्रयास होता है कि मित्र पर आई मुसीबत शीघ्रतम दूर हो जाये। कृष्ण व सुदामा की मित्रता

तो जन-जन में प्रसिद्ध है। दोनों एक साथ एक ही गुरु सान्दीपनी जी से गुरुकुल में पढ़ते थे। अध्ययन समाप्त होने के बाद दोनों अलग-२ हो गये। सुदामा पर आर्थिक कष्ट आ गया। उन्हें सामान्य रूप से अपना जीवन व्यतीत करने में कठिनाईयाँ आईं। उस मुसीबत के समय में सहायता के लिए सुदामाजी को अपने मित्र कृष्ण की याद आई। वह उनके पास गये, दोनों परस्पर मिले और सुदामा जी की समस्या, चिन्ता व विपत्ति समाप्त हो गई। यह मित्रता का उदाहरण है। हम स्वयं भी जब अपने जीवन पर दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं जब-जब हमें किसी प्रकार की विपत्ति या कष्ट हुआ तो हमारी सहायता के लिए हमारे अनेक मित्र ही सामने आये और उनके सहयोग से हम अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल हुए। हम समाज में भी देखते हैं कि सभी लोग अपने-अपने मित्र बना कर रखते हैं। उनसे मिलते-जुलते रहते हैं। उनसे मिलकर प्रसन्न होते हैं। जब कभी उनका बाहर जाने व घूमने का कार्यक्रम होता है तो वह अपने

प्रियजनों, जो मित्र की शर्तों को कम या पूरा पूरा निबाहते हैं, उनके साथ जाते हैं। इसका कारण घर से दूर यात्रा में उनमें सुरक्षा का भाव रहता है।

हम यहाँ संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक वेद का उदाहरण लेते हैं। ऋग्वेद के एक मन्त्र में बताया गया है कि

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्य्यमा।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः॥

ईश्वर हमारा ऐसा मित्र है जो सदैव हमारा कल्याण चाहता है व करता भी है। अब यह कैसे जानें कि ईश्वर का अस्तित्व है और वह हमारा मित्र है? उसका कुछ-कुछ स्वरूप भी हमें ज्ञात होना चाहिये। हम इस संसार को तथा अपने व दूसरों के शरीरों को देखते हैं। मनुष्य इन्हें बना नहीं सकते। अन्य कोई ऐसी सत्ता व शक्ति समस्त संसार में दिखाई नहीं देती जो इन्हें बना सके, परन्तु यह बने हुए हैं। हम नये-नये मानव व अन्य प्राणियों के शरीरों को बनते हुए देख रहे हैं जो निश्चित रूप से संसार में एक दिव्य, विशाल, सर्वज्ञ, चेतन, बलवान, अनादि व अनुत्पन्न, अमर व अनन्त सत्ता के होने का प्रमाण है। उसी सत्ता को ईश्वर कहते हैं। यह संसार अत्यन्त विशाल है जिसकी पूरी कल्पना भी मनुष्य नहीं कर पाता है। इससे वह दिव्य सत्ता सर्वव्यापक सिद्ध हो जाती है। और विचार करने पर वह सत्ता सत्य, चित्त अर्थात् ज्ञानवान और कर्मशील, आनन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता सिद्ध होती है। ऐसा उसका स्वरूप है। वह ईश्वरीय सत्ता हमारी मित्र कैसे है? इस प्रकार से कि उसने हम जीवों वा आत्माओं को सुख देने के लिए इस ब्रह्माण्ड व इसके समस्त पदार्थों, अन्न, दुग्धधारी पशु, फल के वृक्ष, जल, वायु, औषधि आदि की रचना की है। यदि वह संसार या ब्रह्माण्ड की रचना न करता तो हम जीव लोगों का अस्तित्व होकर भी व्यर्थ का सिद्ध होता। हम मनुष्य या अन्य प्राणि योनियों में शरीर धारण नहीं कर सकते थे। उसने हमारे सबके लिए संसार को भी बनाया और हमें कर्म व भोग= सुख व दुःख के लिए शरीर प्रदान किये। इस कारण से वह हमारा मित्र सिद्ध होता है। यदि वह ऐसा न करता तो हम उसे मित्र न कहकर शत्रु कहते। अब तो वह निश्चित रूप से हमारा मित्र सिद्ध होता है और हम और सारा संसार उसके कृतज्ञ हैं।

उसने कितनी सुन्दर व्यवस्था की है कि हमें माता, पिता,

भाई, बहिन, सांसारिक मित्र, दादा, दादी, ताऊ, चाचा, तायी, चाची, बुआ, फूफा, मौसी, मौसा, मामी, मामा आदि सहयोगी दिये हैं। इतना ही नहीं हमारे भोग के लिए पूर्व उल्लिखित संसार के अनेक पदार्थ बना कर दिये हैं। बहुत से पदार्थों का उपयोग तो हम विगत एक-दो शतकों से कर रहे हैं और बहुत से पदार्थ आज भी ऐसे हैं जिनका उपयोग हम इसलिए नहीं कर पा रहे हैं कि हमें उनके उपयोग का ज्ञान ही नहीं है। हमारे वैज्ञानिक अनुसंधान में संलग्न हैं और भविष्य में नये पदार्थ, उपकरण व उत्पाद हमारे सामने आयेंगे। वह हमारा मित्र कैसा है, उपर्युक्त मन्त्र में ही कहा गया है कि वह 'वरुण' अर्थात् वरणीय, सर्वोत्कृष्ट, स्वीकारणीय व वरेश्वर है, 'अर्यमा' अर्थात् पक्षपातरहित होकर न्याय का करने वाला है, 'इन्द्र' अर्थात् परम ऐश्वर्यशाली है, 'बृहस्पति' अर्थात् विद्या व वाणी का सर्वोत्तम महान् स्वामी है जिसमें सुख की पराकाष्ठा है और जो धर्मात्मा मनुष्यों को अपना सुख व आनन्द प्रदान करता है। उसी परमात्मा से वेदवाणी व उस वेदवाणी के विकार से संसार में प्रचलित सभी वाणियाँ व भाषायें अस्तित्व में आईं हैं, वह 'विष्णु' अर्थात् सर्वव्यापक है, सर्वत्र विद्यमान है तथा 'उरुक्रमः' है अर्थात् अनन्त बलशाली व पराक्रमी है। जब हम उस ईश्वर के शरणागत हो कर उसको याद करते हैं व स्मरण करते हैं तो उसका ध्यान करने से वह हमें हमारी पात्रता के अनुरूप सुख, शक्ति, शान्ति व सामर्थ्य आदि देता है व हमारी इच्छाओं को पूरा करता है। इस प्रकार से ईश्वर संसार में मनुष्यों का सर्वोपरि मित्र है। वह अनादि काल से हमारा मित्र है और अनन्त काल अर्थात् हमेशा हमारा मित्र रहेगा। क्योंकि वह अजन्मा व अमर है तथा हम भी अजन्मे व अमर हैं। उसका व हमारा अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होगा। हम हमेशा-हमेशा साथ-साथ रहेंगे। यह सत्य ज्ञान है। किसी को भी इसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। जो उपेक्षा करेगा वह अपनी बहुत बड़ी हानि करेगा। जिसकी पूर्ति जन्म-जन्मान्तर में भी पूरी होगी या नहीं, कहा नहीं जा सकता।

यजुर्वेद ३६/१८ तो एक पूरा मन्त्र (**दृते दृꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥**) ही ऐसा है जिसका मुख्य विषय ही 'मित्र कैसा हो' का वर्णन कर रहा है। इस मन्त्र में ईश्वर को अनन्त बल, महावीर, दुष्ट-स्वभाव-नाशक, विदीर्ण-कर्म, परम ऐश्वर्यवत्, सर्वसुहृदीश्वर, सर्वान्तर्यामिन् परमात्मा बताया गया है और उससे प्रार्थना व विनय की गई है कि- हे भगवन्! मुझे स्थिर न रखकर गतिशील रखिये, क्रियाशील रखते हुए मुझे विद्या, सत्य, धर्म आदि शुभगुणों में सदैव स्वकृपासामर्थ्य ही से स्थित करो। मुझको धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि तथा विद्या-विज्ञान आदि दान से अत्यन्त बढ़ाओ, मुझे सब प्राणी मित्र की दृष्टि से देखें, सब मेरे मित्र हो जायें, कोई मुझसे किंचिन्मात्र भी वैर-दृष्टि न करे। मैं निर्वैर होके सब प्राणी और अप्राणी चराचर जगत् को मित्र की दृष्टि से स्वात्म (अपनी आत्मा के समान), स्वप्राणवत् प्रिय जानूँ अर्थात् पक्षपात छोड़के सब जीव व देहधारीमात्र अत्यन्त प्रेम से परस्पर वर्तमान करें। अन्याय से युक्त होके किसी पर कभी हम लोग न वर्तें।

वस्तुतः मनुष्य का कर्तव्य ही उसका धर्म कहलाता है। किसी विद्वान् या महापुरुष द्वारा प्रवर्तित विचारधारा मत या मजहब हो सकती है, धर्म कदापि नहीं। धर्म का संस्थापक तो ईश्वर ही होता है जो कि सब मनुष्यों व प्राणियों का सदा-सर्वदा मित्र है और रहेगा और वही वेद के रूप में सृष्टि के आरम्भ में धर्म का उपदेश करता है। बाद में महापुरुषों द्वारा जो मत स्थापित होते हैं वह मजहब, सम्प्रदाय या मत होते हैं, उन्हें धर्म होना स्वीकार नहीं किया जा सकता। वेदों में ईश्वर ने उपदेश दिया है कि वह सभी प्राणियों का मित्र है और उसका अनुकरण कर सब प्राणियों को एक दूसरे का मित्र बनना चाहिये। आज स्थिति इसके विपरीत है। इसमें सुधार की आवश्यकता है। इस संसार में पूर्ण सुख तभी होगा जब संसार के लोग एक दूसरे के सब तरह से मित्र बन जायेंगे। इस मित्रता व दोस्ती के भाव जो कि परमधर्म है, का सब मनुष्यों के लिए परमात्मा ने उपदेश किया है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में ईश्वर को **'इन्द्रस्य युज्यः सखा'** कहकर उसे मनुष्य आदि प्राणियों का सच्चा व योग्य मित्र कहा गया है। ईश्वर से बढ़कर मनुष्य व अन्य प्राणियों का कोई मित्र नहीं है।

मित्रता व दोस्ती से दोनों को लाभ होता है व शत्रुता से दोनों को हानि होती है। अतः हमें सबसे मित्रता करनी चाहिये और शत्रुओं को भी यदि मित्र बनाया जा सकता हो तो बनाना चाहिये। इतिहास में राम-सुग्रीव, कृष्ण-सुदामा तथा राम-विभीषण की मित्रता के उदाहरण से स्पष्ट है कि दो व्यक्तियों की मित्रता से दोनों को लाभ होता है। वहीं राम व रावण तथा दुर्योधन व पाण्डवों की शत्रुता से यह परिणाम निकलता है जो असत्य पर होता है, उसका विनाश हो जाता है और सत्य विजयी होता है। मित्रता सत्य व्यवहार का प्रतीक है और शत्रुता असत्य व्यवहार का। सभी मनुष्यों को प्रतिदिन आत्म चिन्तन करना चाहिये और अपने हृदय से असत्य व शत्रुता के भावों को निकाल कर उनके स्थान पर सत्य व मित्रता के भावों को स्थान देना चाहिये।

१९६ चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१
चलभाष- ०९४१२९८५१२१

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

मैं यहाँ आकर काफी प्रसन्न हूँ कि मुझे सत्य का ज्ञान हुआ। मुझे इस बात का गर्व है कि मैं भारत का नागरिक हूँ। यहाँ आने से पहले सोचा था कि कोई देखने लायक चीजें होंगी। जिसे देखकर घूमकर वापस आ जाएँगे। लेकिन यहाँ आने पर पता चला कि सत्य क्या है और असत्य क्या। मनुष्य अपने कर्मों का फल यहीं पाता है। मन को शांत रखने वाली बातें तथा एक अजीब-सी आहट महसूस की हमने यहाँ आकर। हमें अत्यन्त सुन्दर लगा। मन तो करता है कि बस यहीं रह जाएँ।

- अनिल मनान
(इस वर्ष के २० हजारवें दर्शक)

कसाइयों की सभ्यता

गिरीश त्रिवेदी

इसे पकड़ो, मारो, काटो और खा जाओ। आज के तथाकथित सभ्य विश्व की यही सभ्यता है। जंगली लोग भी तो ऐसा ही करते हैं। फिर क्या अन्तर रह गया जंगली और शिक्षित-सभ्य में? तो क्यों न इसे कसाइयों की सभ्यता कहा जाए। आज विश्व की ९५ प्रतिशत जनसंख्या मांसाहारी है। मांसाहार मनुष्य से उसकी मानवता छीन लेता है। परिणाम सामने है। मांसाहारी आपस में लड़ते रहते हैं। साम्राज्यवाद, भोगवाद, पूंजीवाद, आतंकवाद जैसे कई उपद्रव मात्र मांसाहार के कारण हैं क्योंकि मांसाहारी धर्म का ढोंग कर सकता है, मजहब या रिलिजियन का अपने को फोलोवर बता सकता है लेकिन अध्यात्म से शून्य होने पर ये सब अर्थहीन, व्यर्थ हैं।

भारत अन्य सब देशों में विशेष है। यहाँ की ३९ प्रतिशत जनसंख्या शाकाहारी है। यह प्रतिशत आँकड़ा भी गत सहस्र वर्ष की परतंत्रता काल में बहुत कम हुआ है। अन्यथा भारत में मांसाहार का प्रचलन नगण्य था। हमारे राष्ट्र में एक मापदंड था कि जुआ खेलने वाला, मदिरा पीने वाला, पर-पुरुष या पर-स्त्री गमन करने वाला और मांसाहारी ये सब लोग गये गुजरे अधम होते हैं और फिर ऐसों की संख्या भी बहुत कम रहती थी। यही तो भारत का चरित्र बल था जिसे फिर से प्राप्त करना है।

मुगलों और अंग्रेजों ने हमें भ्रष्ट करने में भरपूर ताकत लगाई और आज हमारी स्वतंत्र भारत की सरकारें भी हमारी सभ्यता और संस्कृति को तहस-नहस करने के षड्यंत्र करें तो क्या अन्तर करेंगे आप परतंत्रता और स्वराज्य में। यदि हमारी सरकारें भारत स्वाभिमान से ओतप्रोत होतीं या हों तो भारत की संस्कृति को परिष्कृत करके स्वदेश में और विश्व में भी इसका प्रचार हो सकता है जिससे पूरे संसार का कल्याण हो परस्पर देशों में सद्भाव हो। प्राणी मात्र का कल्याण हो, विश्व भारत को आदर और सम्मान के दृष्टिकोण से देखे। भारत को अपना गुरु माने, निःसंदेह ऐसा हो सकता है।

इतिहास बताता है भारत जब अपने चरम उत्कर्ष पर था तब उस काल में यहाँ वधशालाएँ नहीं होती थीं। गौ-पालन बड़े उत्साह से होता था। भारत में अरब, तुर्क और यूरोपीय सत्ताओं के अलावा सभी शासकों ने गोवध सदा प्रतिबंधित रखा था। यहाँ गौ हत्यारे को मृत्युदंड तक के प्रावधान थे। आज तो एशिया के सबसे बड़े तीन कतलखाने चीन या पाकिस्तान में नहीं हैं, ये हैं भगवान महावीर के भारत में। कृष्ण के भारत में और गाँधीजी के भारत में। क्यों हो रही है इन आदर्शों की उपेक्षा। उत्तर स्पष्ट है हमारी सरकारों की इच्छा।

वाजपेयी सरकार ने सन् १९९९ में गौ मांस के आयात और निर्यात दोनों पर प्रतिबंध लगा दिया था। आज भारत में मात्र तीन राज्य ऐसे हैं जहाँ गौ हत्या पूरी तरह प्रतिबंधित है। ये तीन राज्य हैं गुजरात, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ और तीनों ही भाजपा द्वारा शासित हैं। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने अपना संकल्प दोहराया है कि वे मध्यप्रदेश में किसी नये कतलखाने और शराब कारखाने को खोलने की अनुमति नहीं देंगे। साथ ही पुराने कतलखाने के विस्तार को भी अनुमति नहीं देंगे।

भारत के संविधान का अनुच्छेद ४८ स्पष्ट रूप से सरकारों पर यह जिम्मेदारी डालता है कि वे गाय बछड़े एवं दुग्धदाता व भारवाही पशुओं का संरक्षण करेंगी और उनका वध रोकेंगी। अनुच्छेद ५१क के अंतर्गत सभी प्राणियों के प्रति दयाभाव रखना भी नागरिकों का एक मूल कर्तव्य बताया गया है। संविधान की समवर्ती सूची की १७ वीं प्रविष्टि में पशुओं के प्रति क्रूरता रोकना भी सरकारी दायित्व है। राज्य सूची की १५ वीं प्रविष्टि प्रान्तीय सरकारों पर पशुधन के विकास का दायित्व डालती है।

पशुधन का विकास? हाँ, पशुधन का विकास हमारी यू.पी. ए. सरकार के पशुपालन व डेयरी विभाग ने बारहवीं पंचवर्षीय योजना (२०१२-१७) के दौरान गौ मांस निर्यात खोल देने का प्रस्ताव योजना आयोग को सौंपा है। यदि हम सब का विरोध नहीं हुआ तो हमने फिर से यू.पी.ए. सरकार को सत्ता में

लाया तो गौ मांस निर्यात फिर से होना निश्चित है। १९४७ में १८ करोड़ गौवंश था तो आज अनुमानित चार करोड़ से भी कम गोवंश बचा है। देश में दूध की कमी है। छोटे बच्चे और गर्भवती माताएँ कुपोषण का शिकार हैं। नकली सिन्थेटिक दूध की खबरें सुनने को मिलती हैं और हमारी सरकार यूरोप, अमेरीका और अरब देशों को हमारी गौ माता का मांस परोसने की योजना बनाती है। भाइयों, नहीं जागे तो गौ हत्या के जघन्य पाप के हिस्सेदार हम भी होंगे।

हम चाहते हैं कि भारत से गौ हत्या का कलंक पूरी तरह मिटे। सम्पूर्ण भारत में गौ हत्या पर प्रतिबंध लगे तो ऐसा करने के लिए आज हमारे पास मौका है। इसके लिए हमें आगामी २०१४ के लोकसभा चुनावों में केन्द्र में ऐसी सरकार चुनकर भेजनी है जो स्वयं यह इच्छा रखती हो कि गौ हत्या पर संपूर्ण प्रतिबंध लगे। हमें याद रखना चाहिए कि बाबा रामदेव जी जिन उद्देश्यों के लिए काम कर रहे हैं उसमें एक यह भी है कि सरकार गौ हत्या बंदी और गौ हत्यारे को मृत्युदंड का कठोर कानून बनाए।

क्या विडम्बना है कि केन्द्र सरकार के अल्पसंख्यक कल्याण मंत्रालय ने पोषक तत्वों और सन्तुलित खानपान की जानकारी देने के लिए उत्तरप्रदेश में महिलाओं को 'पोषण' नामक पत्रिका बाँटी। इस पत्रिका में शरीर में खून की कमी को दूर करने के लिए गौ मांस के सेवन की सलाह दी गई है। २२ फरवरी २०१३ को मेरठ, हापुड़ लोकसभा के भाजपा सांसद राजेन्द्र अग्रवाल ने इसके विरुद्ध जोरदार आपत्ति की और उसके प्रभाव से मंत्रालय को तत्काल प्रभाव से बाँटी हुई पत्रिका वापस लेनी पड़ी।

यूपीए सरकार के केन्द्रीय मंत्री श्री कपिल सिब्बल की पत्नी ने गत वर्ष कतलखाना खोला है जो शायद भारत का सबसे बड़ा दूसरे नम्बर का है। हद तो तब हुई जब कतलखाने का नाम ही अहिंसा के सबसे बड़े आदर्श भगवान महावीर के नाम 'अरिहन्त' के नाम पर रख दिया। जैन समाज के तीव्र विरोध से अन्ततः उन्हें नाम बदलना पड़ा।

मात्र नाम बदलने से क्या होगा। आखिर कब रुकेंगी ये वधशालायें। क्या भारत में कसाईयों की सभ्यता यों ही फलती फूलती रहेगी?

जय हिन्द। जय भारत।

(यह लेख कुछ माह पूर्व लिखा गया था। सरकार तो बदल गयी है पर लक्ष्य अभी भी दूर है।)

– ४१९ शनीवार पेठ, इलिना अपार्टमेन्ट
पूणे- ४११०३० (महाराष्ट्र)

आर्य समाज मन्दिर, भटार के द्वारा सत्थार्थ प्रकाश महोत्सव एवं योग सधना-योग चिकित्सा शिविर का आयोजन दिनांक १३ जनवरी से १८ जनवरी २०१५ तक किया जा रहा है। यज्ञ के ब्रह्मा आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. सोमदेव जी शास्त्री होंगे। अनेक संन्यासी व विद्वान् इस अवसर पर पधार रहे हैं। कार्यक्रम के आयोजक पटेल प्रगति मण्डल, नन्दिनी योग सेवा ट्रस्ट की ओर से सार्वजनिक आमन्त्रण है।

– आर्य समाज, भटार (सूरत, गुजरात)

अमर हुतात्मा श्रद्धानन्द को शत्-शत् नमन

विमलेश बंसल 'आर्या'

हिन्दी, हिन्दू हिन्दुस्थान
की रक्षा में पाया आनन्द
अमर हो गये हँसते-हँसते।।
अमर हुतात्मा श्रद्धानन्द
दयानन्द के प्यारे शिष्य बन
प्रकट किया उनको आभार
जब तक सूरज चाँद रहेगा
भूल न पायेगा संसार
नास्तिक से बनकर के आस्तिक
मिटा गए जीवन के फंद
अमर हो गये हँसते-हँसते।।
वैदिक धर्म से रिश्ता जोड़ा
जाति पंथ का तोड़ा-रोड़ा
गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति ला
निज संस्कृति का छोड़ा-घोड़ा
शुद्धि चक्र चलाकर सारे
शुद्ध किए मलकाने हिन्द
अमर हो गये हँसते-हँसते।।
बने राष्ट्र के सजग सिपाही
दयानन्द के सच्चे राही
हिन्दू जाति के सुदृढ़ मसीहा
राष्ट्रभक्तनिर्भय उत्साही
तन-मन-धन आहुत कर माँ को,
अमिट छाप गए स्वर्णिम छन्द
अमर हो गये हँसते-हँसते।।
उनके पद चिह्नों पर चलकर
श्रद्धा से श्रद्धाञ्जलि दें
भारत माँ की रक्षा के हित
आओ हम मिलकर बलि दें
शत्-शत् नमन हमारा तुमको
झुकते हैं सर कोटि अनन्त
अमर हो गये हँसते-हँसते।।

- ३२९ द्वितीय तल, संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली-११००६५, मो- ०८१३०५८६००२

समाचार

आर्य समाज रजोली जिला नवादा, बिहार का ८१ वां वार्षिकोत्सव

मगध प्रमण्डलीय आर्य सभा, गया, बिहार के तत्वावधान में आर्य समाज रजोली जिला नवादा, बिहार का ८१ वां वार्षिकोत्सव दिनांक २ से ५ नवम्बर तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिसमें श्री सत्यदेव शास्त्री बरेली, श्री संजय सत्यार्थी कवि व वक्ता, नेमदारगंज एवं अन्य विद्वानों ने भाग लिया जिसका स्थानीय जनता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।

आर्य समाज विदिशा का ९६ वां वार्षिकोत्सव

दिनांक १२ दिसम्बर २०१४ से १४ दिसम्बर २०१४ तक आर्य समाज विदिशा का ९६ वां वार्षिकोत्सव भव्य रूप में मनाया गया जिसमें आर्य जगत् के शीर्षस्थ विद्वान् आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय के अतिरिक्त पूज्य स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती (बनारस), पूज्य स्वामी ऋतस्पति जी (होशंगाबाद), सुश्री अंजली आर्या ने भाग लिया तथा आमंत्रित जनों को अपने उद्बोधन का रसपान कराया गया। इस अवसर पर श्री प्रकाश आर्य, मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं इन्द्रप्रकाश गाँधी, प्रधान मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल भी उपस्थित थे।

महर्षि का निर्वाण दिवस मनाया गया

आर्य समाज, रामपुरा कोटा एवं आर्य शिशुशाला विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आर्य समाज अंजली विहार, कोटा के प्रधान श्री राजेन्द्र आर्य ने प्रेरक उद्बोधन प्रदान किया और सत्यार्थ प्रकाश के गौरव का वर्णन किया। इस अवसर पर श्रीमती मृदुला सक्सेना, श्री इन्द्रकुमार सक्सेना भी उपस्थित थे।

– डी.पी.मिश्रा, व्यवस्थापक

आर्य समाज, सुमेरपुर में प्रान्तीय योग-व्यायाम प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज, सुमेरपुर के तत्वावधान में २४ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर तक प्रान्तीय योग-व्यायाम प्रशिक्षण व व्यक्तित्व निर्माण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन व ध्वजारोहण चेतन विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय, शास्त्री सर्किल, सुमेरपुर में २४ दिसम्बर २०१४ को हुआ। शिविर में आर्यवीरों को शारीरिक एवं बौद्धिक विद्वद्जनों द्वारा प्रदान किए गए। शिविर का समापन भव्य व्यायाम प्रदर्शन के साथ ३१ दिसम्बर २०१४ को हुआ।

वार्षिकोत्सव मनाया गया

आर्य समाज, नरवा पीताम्बरपुर का २४ वां वार्षिकोत्सव दिनांक १० से १२ अक्टूबर तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, पंडित त्रियुगीनारायण पाठक, गोरखपुर, पंडित प्रदीप शास्त्री, श्रीमती सीता देवी आर्या एवं श्री सन्तकुमार आर्य, कोलकाता ने अपने प्रेरणास्पद उद्बोधन प्रदान किए।

– राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल

चतुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज, मोहन नगर हिण्डौन सिटी, जिला करौली द्वारा २ दिसम्बर से २८ दिसम्बर तक चतुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया। आचार्य श्री शिवकुमार शास्त्री, (गुरुकुल-कोलायत, बीकानेर) के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आचार्य जी द्वारा ईश्वर, जीव, प्रकृति, कर्मफल, पुनर्जन्म, यज्ञ, कर्तव्याकर्तव्य आदि पर प्रकाश डाला गया।

– ओमप्रकाश आर्य, प्रधान

महिला आर्य समाज ने मनाया स्थापना दिवस

महिला आर्य समाज, मानसरोवर जयपुर ने अपना २० वां स्थापना दिवस १३ से १६ नवम्बर तक मनाया। आचार्य आनन्द पुरुषार्थी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। संचालन डॉ. संदीपन आर्य ने किया।

– ईश्वर दयाल माथुर

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री सम्मानित

अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी का आर्य समाज सेक्टर ७ रोहिणी, दिल्ली के विशाल सभागार में 'जय किशन दास सुनहरी देवी आर्या स्मृति ट्रस्ट' की ओर से शॉल, कलात्मक स्मृति चिह्न प्रशस्ति पत्र एवं मोतियों की माला भेंट कर 'संस्कृति गौरव' सम्मान से विभूषित किया गया। उन्हें यह सम्मान भारत सरकार के सूचना व प्रसारण मंत्रालय के पूर्व महानिदेशक पद्मश्री डॉ.श्याम सिंह शशि जी ने प्रदान किया।

रामपाल के विरुद्ध कार्यवाही हेतु ज्ञापन दिया

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, अलवर ने सतलोक आश्रम के संचालन रामपाल की गतिविधियों व समाज विरोधी क्रियाकलापों के चलते मुख्यमंत्री, हरियाणा सरकार से माँग की है कि ऐसे राष्ट्रद्रोही व्यक्ति को अतिशीघ्र कठोर दंड दिया जाए। इस हेतु सभा की ओर से ज्ञापन पत्र मुख्यमंत्री हरियाणा को भेजा गया है और अधिकाधिक आर्य समाजियों से अपील की है कि वे भी इस तरह का ज्ञापन पत्र हरियाणा सरकार को प्रेषित करें।

लाला लाजपत राय बलिदान दिवस मनाया गया

बालाजी इंस्टिट्यूट ऑफ एजूकेशन, कोटा में १७ नवम्बर २०१४ को पंजाब केसरी लाला लाजपत राय का बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आर्यावर्त केसरी पत्रिका के सम्पादक एवं प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. अशोक आर्य ने मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में आर्य विद्वान् रामप्रसाद याज्ञिक ने भी लालाजी के जीवन पर प्रकाश डाला।

– अरविन्द पाण्डेय, प्रचार एवं कार्यालय सचिव

अथर्ववेद (द्वितीय भाग) काव्यार्थ का विमोचन

दिनांक २३ नवम्बर १४ को कविवर वीरेन्द्र राजपूत के काण्ड ६ से काण्ड १० तक के अथर्ववेद (द्वितीय भाग) काव्यार्थ का विमोचन वैदिक साधना आश्रम तपोवन देहरादून में दर्शनाचार्य डॉ.आशीष द्वारा किया गया। श्री सत्यपाल सरल भजनोपदेशक ने २ मंत्रों का काव्यार्थ गाकर सुनाते हुए ग्रन्थ की भूरि भूरि प्रशंसा की।

– महात्मा उत्तम मुनि

वेद प्रचार सप्ताहऔर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

आर्य समाज, पीपलिया मंडी, जिला मन्दसौर के सौजन्य से ये आयोजन भव्य रूप में किया जा रहा है। २९ दिसम्बर १४ से ४ जनवरी १५ तक वेद ज्ञानगंगा की वर्षा के लिए देहरादून से पंडित सत्यपाल सरल, करनाल से सुश्री अंजली आर्या पधार रही हैं।

– सत्येन्द्र आर्य

हलचल

शुभ विवाह

न्यास के सक्रिय सहयोगी परिवार में प्रसन्नता अवसर तब आया जब दिनांक २७ नवम्बर २०१४ को शोभित मित्तल सुपुत्र श्री महेश मित्तल का शुभ विवाह सांभर निवासी श्री राजेन्द्र प्रसाद जी की सुपुत्री शेफाली के साथ उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। विवाह संस्कार आर्य जगत् के प्रख्यात् विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने सम्पन्न कराते हुए संस्कारान्तर्गत आने वाले मन्त्रों की सारगर्भित व्याख्या की जिससे उपस्थित जन समुदाय गद्गद् हो गया।

न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से मित्तल परिवार को हार्दिक बधाई।

श्रीमत् स्वामी वेदानन्द सरस्वती बने प्रधान संरक्षक

श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, भागल भीम, भीनमाल की दिनांक १२-१०-२०१४ को सम्पन्न बैठक में न्यास के संस्थापक प्रमुख श्री आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक ने सर्वसम्मत परामर्श पर दिनांक २१-१०-२०१४ को श्री आचार्य धर्मबन्धु जी का प्रधान संरक्षक पद पर कार्यकाल पूर्ण हो जाने पर दिनांक २२-१०-२०१४ से पूज्य श्रीमत् स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती (उत्तरकाशी) को आगामी तीन वर्ष के लिए न्यास का प्रधान संरक्षक मनोनीत किया। - डॉ. पदमसिंह चौहान, मंत्री

दिवंगत हुए देवराज जी आर्य

महर्षि दयानन्द मार्ग, बीकानेर स्थित आर्य समाज के चौरासी (८४) वर्षीय देवराज जी का स्वर्गवास दिनांक २८-११-१४ की प्रातः बेला में अचानक हो गया। देवराज जी विगत बाइस वर्षों से गंगाशहर रोड़ स्थित हमारे अतिथि भवन की देख-रेख करते थे और पधारने वाले अतिथियों, संन्यासियों और उपदेशकों आदि के सेवा सुश्रूषा और भोजनादि की व्यवस्था में पत्नी सहित जुटे रहते थे। न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति व सद्गति तथा परिवारीजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें। - महेश सोनी, मंत्री

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - १० के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १०** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री श्याम कुमार वर्णवाल (आसनसोल, प. बंगाल), श्री अजीत आर्य (सीतापुर, उ. प्र.), माही सिंह (मुजफ्फरपुर, बिहार), श्री सुरेन्द्र प्रसाद (मुजफ्फरपुर, बिहार), डॉ. प्रियंका पाण्डेय (धनपतगंज, उ. प्र.), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया (शाहपुरा, राज.) श्रीमती सरोज मुखी (न्यूयार्क), श्री सरस्वती प्रसाद गोयल (सवाईमाधोपुर, राज.), कु. हिम्मु-बुलबुल झवर (सीहोर, म.प्र.), श्रीमती सीमा शर्मा (बीकानेर, राज.)। इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।

प्रतिस्वर

मान्यवर, आपका लेख 'जहालत की इंतहा' तो बहुत उत्तम है तथापि आपने इसे केवल आर्यों के पढ़ने हेतु प्रकाशित किया है जो कि पूर्व से ही आर्य हैं। इस लेख को आप यदि सामान्य समाचारों के पत्रों में स्थान दे पाते तो अन्य समाजियों को भी लाभ होता। पाखण्ड के विरुद्ध आवाज उठाने हेतु स्वामी दयानन्द ने अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि करने का आदेश दिया है। आज आर्य समाजी इसका एक चौथाई भाग भी आमजन में प्रकाशित व प्रचारित कर पाते तो अच्छा होता। केवल लेखन कार्य से संभव नहीं है। कृपया यह विषय जन जन तक प्रकाशित करें।

- प्रेमचन्द्रशर्मा, रेडियो कॉलोनी, महानगर, लखनऊ

जनवरी सन् १२ से निरन्तर प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ में लेख, प्रेरक प्रसंग, गीत, धार्मिक बातें व कुरीति नाशक विचारधाराओं की सामग्री निश्चित ही संरक्षकों, परामर्श दाता सम्पादक मंडल, सम्पादक एवं समस्त सहयोगीगण के अथक प्रयासों का ही फल है जिसके लिये वे सभी धन्वाद के पात्र हैं।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित इस पत्रिका में सभी सम्पादित लेख शिक्षाप्रद, मानस बदलने वाले सारगर्भित एवं रोचक होते हैं जो पाठकों को पौष्टिक आहार सिद्ध हो रहे हैं।

नवम्बर सन् १४ के अंक में अशोक आर्य जी का 'जहालत की इन्तहा' समाज सुधारक लेख एवं 'सत्यार्थ पीयूष' में 'वैवाहिक जीवन' में सही जीवन प्रेमपूर्वक सम्मानित कैसे बीते, बताया है जो समाज को सही दिशा दिखाने वाला है। डा. गायत्री पंवार जी द्वारा रचित 'गीता का संदेश' में उन्होंने संक्षिप्त में 'गीता' का ज्ञान दिया जो निश्चित तौर पर प्रभाव छोड़ता है। 'कथा सरित' में सुरेश पाटोदी जी ने छोटे से लेख 'माता-पिता की सेवा' में सब कुछ लिख लिख दिया कि 'जिन्दगी में माता पिता से बढ़कर कोई नहीं'। अच्छा लगा। कविवर रामधारी सिंह 'दिनकर' जी का गीत 'केवल वह वीर जिएगा' में 'जीवन का अन्तिम ध्येय स्वयं जीवन है', जीवन क्या है? बता दिया।

निवेदन है कि संभव हो सके तो 'सत्यार्थ प्रकाश पहेली' हल की हुई तीसरे माह के अंक में प्रकाशित करने की कृपा किया करें व 'शंका का समाधान' का नया स्तम्भ शुरू करने की कृपा करें क्योंकि शंका का समाधान होना भी आवश्यक है जो मात्र यही पत्रिका कर सकती है। ऐसा मुझे विश्वास है। - राजेन्द्र पाठक 'तन्मय', जयपुर

महर्षि दयानन्द सरस्वती एक्यूप्रेशर सेवा केन्द्र का शुभारम्भ

आर्य समाज मन्दिर, महर्षि पाणिनि नगर, पूँजला, जोधपुर में दिनांक ३० नवम्बर २०१४ को जन-सेवा हेतु 'महर्षि दयानन्द सरस्वती एक्युप्रेशर सेवा केन्द्र' का शुभारम्भ किया गया। आर्य समाज के प्रधान श्री गजेन्द्रसिंह सांखला एवं उनके भ्राता श्री महेन्द्र सिंह सांखला द्वारा अपने माता-पिता स्व. श्रीमती मथुरा देवी एवं स्व. श्री मांगीलाल जी सांखला (भामाशाह रत्न से सम्मानित) की स्मृति में एक्यूप्रेशर के समस्त आधुनिक उपकरण उपलब्ध कराये गये। प्रतिदिन सायं ४ बजे से ६ बजे तक विशेषज्ञों की देखरेख में विभिन्न रोगों का इलाज होगा। मंच सचालन श्री शिवराम शास्त्री व धन्यवाद श्री करण सिंह भाटी व अमृतलाल जी जसमतिया द्वारा किया गया। - कैलाश चन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष

गृहस्थ जीवन का आदर्श स्वरूप

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जात्या पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शन्तिवान्।।
मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया।।
इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वस्तकौ।।

- अथर्व. ३/१४/३०,१/२/३,२२

भावार्थ- पुत्र अपने सदाचारी और धर्मात्मा पिता के सुव्रतों और सुनियमों का पालन करने वाला, तथा आज्ञाओं, आदेशों का आदर करने वाला होना चाहिए। माता के सर्वथा भक्त हों। पति-पत्नि परस्पर में सदैव मधुरवाणी का प्रयोग करें। पति-पत्नि हर समस्या का सौहार्द के साथ समाधान करें और प्रत्येक मतभेद का आदर के साथ निराकरण करें।

न भाई-भाई से द्वेष करें, न बहिन-बहिन से, सभी समानव्रती, समान व्यवस्था वाले संचालक होकर परस्पर में कल्याण-वर्षिणी वाणी का प्रयोग करें। तथा दम्पती अपने पुत्र, पोतों सहित सर्वथा आनन्द सुख से जीवन व्यतीत करते हुए गृहस्थाश्रम की मर्यादाओं का पालन करें।

गृहाश्रम की इस प्रकार की व्यवस्था करने का महर्षि का तात्पर्य इतना ही है, कि राष्ट्र के नागरिक सुंदर, स्वस्थ, आदर्श चरित्रवान् बनकर जीवन की सार्थकता का अनुभव कर सकें। जिससे देश, जाति तथा राष्ट्र का उत्तरोत्तर कल्याण होता रहे। वधु-वरों के चिन्तन के आधार पर गृहाश्रम पारस्परिक सौमनस्य, सहानुभूति, समर्पण तथा त्याग निष्ठा के अनुसार ही पूर्ण सुखदायक (स्वर्ग) हो सकता है।

गृहस्थाश्रम ज्येष्ठाश्रम क्यों है ?

यथा नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम्।
तथैवाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितिम्।।
यथा वायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्वजन्तवः।
तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्व आश्रमाः।।
यस्मात्त्रयोऽप्याश्रमिणो दानेनान्नेन चान्वहम्।
गृहस्थेनैव धार्यन्ते तस्माज्ज्येष्ठाश्रमो गृही।।
स सन्धार्यः प्रयत्नेन स्वर्गमक्षयमिच्छता।
सुखं चेहेच्छता नित्यं योऽधार्यो दुर्बलेन्द्रियैः।।

- मनु. ६/६०, ३/७७-७६

जैसे नदी और बड़े-बड़े नद तब तक भ्रमते ही रहते हैं जब तक समुद्र को प्राप्त नहीं होते, वैसे ही सब आश्रमी गृहस्थ ही को प्राप्त होके स्थिर होते हैं। जैसे वायु के आश्रय से सब जीवों का वर्त्तमान सिद्ध होता है, वैसे गृहस्थ ही के आश्रय से सब आश्रम स्थिर रहते हैं। बिना इस आश्रम के किसी आश्रम का कोई व्यवहार सिद्ध नहीं होता।।

"जिससे ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ और संन्यासी तीन आश्रमों को दान और अन्नादि देके प्रतिदिन गृहस्थ ही धारण करता है, इससे गृहस्थ ज्येष्ठाश्रम है अर्थात् सब व्यवहारों में धुरन्धर कहाता है।। इसलिए जो मोक्ष और संसार के सुख की इच्छा करता हो वह प्रयत्न से गृहस्थाश्रम का धारण करें। जो गृहाश्रम दुर्बलेन्द्रिय अर्थात् भीरू और निर्बल पुरुषों से धारण करने के अयोग्य है, उसको अच्छे प्रकार धारण करे।"

जितना कुछ व्यवहार संसार में है, उसका आधार गृहाश्रम है। जो यह गृहाश्रम न होता तो संतानोत्पत्ति के न होने से ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम कहाँ से होते?

वेद और स्मृति की आज्ञानुसार यह आश्रम तीनों को और पुष्ट करता है, इसलिए गृहस्थ सबसे श्रेष्ठ है।

'जो कोई गृहस्थाश्रम की निन्दा करता है वही निन्दनीय है- जो प्रशंसा करता है, वही प्रशंसनीय है।'

उपसंहार

स्वर्ग की परिभाषा करते हुए महर्षि दयानन्द अपने ग्रन्थ रत्न 'आर्योद्देश्य रत्न माला' में लिखते हैं- 'विशेष सुख तथा सुख के साधनों की प्राप्ति ही स्वर्ग कहलाता है।'

इस प्रकार के विशेष सुखोपलब्धि के लिए जिन साधनों की आवश्यकता होती है उनका वर्णन आचार्य चाणक्य इस प्रकार करते हैं-

सानन्दं सदनं सुताश्च सुधियः कान्तामनोहारिणीं
सन्मित्रं सुधनं स्वयोषितिवतिश्चाज्ञापराः सेवकाः।
आतिथ्यं प्रभुपूजनं प्रतिदिनं मिष्टाशपानं गृहे
साधोः संगमुपासते हि सततं धन्यो गृहस्थाश्रमः।।

- चाणक्य नीति- अ. १२ श्लोक. १

जिस गृहस्थ में बुद्धिमान पुत्र हों, प्रिय भाषिणी स्त्री हो, यथेच्छ धन हो, संयमवृत्ति (अपनी स्त्री से प्रेम) हो, नौकर आज्ञाकारी

हों, अतिथि और साधु सेवा का स्वभाव हो, ईश्वर परायणता हो, मीठा व ग्रहण करने योग्य अन्नपान हो, सज्जनों की संगति हो, वह स्वर्ग समान गृहस्थ अत्यन्त प्रशंसनीय और धन्य है।

इस प्रकार का सुख सुविधा-सम्पन्न गृहस्थाश्रम सदैव स्वर्गीय आनन्द की अनुभूति कराने वाला होता है। प्रस्तुत पद्य के अन्त में 'धन्यो-गृहस्थाश्रमः' के स्थान पर यदि "स्वर्गोगृहस्थाश्रमः" का पाठान्तर कर दिया जावे तो गृहस्थाश्रम की सार्थकता स्वर्ग में स्वयं ही परिणित हो जावेगी।

एक प्राचीन नीतिकार ने नकारात्मक मान्यताओं के आधार पर नरक (श्मशान तुल्य गृह) का वर्णन निम्नलिखित किया है-

'न विप्रपादोदक कर्दमानि न वेदशास्त्रध्वनिगर्जितानि।'
स्वाहा स्वधाकारविवर्जितानि श्मशानतुल्यानि गृहाणि तानि।।

उल्लिखित पद्य को यदि सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर दिया जावे तो-

सविप्रपादोदककर्दमानि स वेदशास्त्रध्वनिगर्जितानि।
स्वाहास्वधाकारसुगुञ्जितानि स्वर्गाणि तुल्यानि गृहाणितानि।।

अर्थात् जिन घरों में भोजन के समय वेदपाठी ब्राह्मणों के चरण धुलाने से कीचड़ होती हो, जहाँ पर वेद मंत्रों की सुन्दर ध्वनि गूँजती हो, जहाँ सदैव शास्त्रीय चर्चाओं के साथ होम में स्वाहा-स्वाहा की ध्वनियाँ गुन्जायमान होती हों ऐसे घर स्वर्ग के समान सुखदायक माने जाते हैं।

यदि विश्व के लोग चाहते है कि गृहस्थाश्रम में वैदिक स्वर्ग की प्राप्ति कर सकें, तो उन्हें महर्षि दयानन्द निर्दिष्ट उपर्युक्त गृहस्थाश्रम के नियमों का पालन करना होगा। अन्य कोई मार्ग नहीं है।

संपादक- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१

अतृप्त मन

कथा सरित

जंगल में एक पेड़ के नीचे एक वृद्ध गुरु अपने युवा शिष्य के साथ बैठा था। चारों ओर घास का मैदान था। इसमें सैकड़ों सफेद गुलाब के फूल खिले थे। युवक कुंवारा था और अक्सर गुरु के पास सत्संग के लिए आता रहता था। अध्यात्म और धर्म चर्चा के बीच अचानक युवक ने विषय बदल दिया और गुरु से पूछा- 'महाराज, मेरा अध्ययन पूरा हो चुका है। मैंने अपने पिता का व्यवसाय संभाल लिया है और इन दिनों मेरे विवाह की बात भी चल रही है। लेकिन कई युवतियों को देखकर भी मैं अपने लिए कोई योग्य जीवन साथी नहीं तलाश सका। आप बताएँ कि मैं क्या करूँ?'

गुरुजी बोले- बेटा, तुम एक काम करो। मैदान में अंतिम छोर तक एक चक्कर लगाओ। जो गुलाब का फूल तुम्हें सबसे खुबसूरत लगे वह मेरे लिए तोड़कर ले आओ। बस एक शर्त है कि आगे बढ़ा कदम पीछे नहीं मुड़ना चाहिए। युवक गया और थोड़ी देर बाद, खाली हाथ लौट आया। गुरु ने पूछा- तुम कोई फूल नहीं लाए?

शिष्य ने जवाब दिया- गुरु जी, मैं एक के बाद एक फूल देखता आगे बढ़ा। जब कोई सुंदर फूल देख उसे तोड़ने के लिए झुकता तो मेरे मन में यह ख्याल आता कि हो सकता है आगे इससे भी बेहतर फूल हो। मैदान के अंत में मुझे कुछ सुंदर फूल दिखे भी, लेकिन पास जाकर देखा तो वे मुरझाए हुए थे। उन्हें लाने की मेरी इच्छा ही न हुई। इसलिए मैं खाली हाथ लौट आया।

गुरु ने कहा- 'बेटा, जिंदगी भी ऐसी ही है। यदि सबसे योग्य ढूँढने में लगे रहोगे तो अंत में तुम्हारे हाथ मुरझाए फूल ही आएँगे।' युवक गुरु का संकेत समझ गया।

संकलन- राधा नाचीज

सर्दियों में बादाम से ज्यादा असरदार है चना रोज खाएँगे तो होंगे ये ढेरों फायदे

सर्दियों में रोजाना ५० ग्राम चना खाना शरीर के लिए बहुत लाभकारी होता है। आयुर्वेद मे माना गया है कि चना और चने की दाल दोनों के सेवन से शरीर स्वस्थ रहता है। चना खाने से अनेक रोगों की चिकित्सा हो जाती है। इसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, नमी, चिकनाई, रेशे, कैल्शियम, आयरन व विटामिन्स पाए जाते हैं। चने को गरीबों का बादाम कहा जाता है, क्योंकि ये सस्ता होता है लेकिन इसी सस्ती चीज में बड़ी से बड़ी बीमारियों से लड़ने की क्षमता है। चने के सेवन से सुन्दरता बढ़ती है साथ ही दिमाग भी तेज हो जाता है। मोटापा घटाने के लिए रोजाना नाश्ते में चना लें। अंकुरित चना ३ साल तक खाते रहने से कुष्ट रोग में लाभ होता है। गर्भवती को उल्टी हो तो भुने हुए चने का सत्तू पिलाएँ। चना पाचन शक्ति को संतुलित और दिमागी शक्ति को भी बढ़ाता है। चने से खून साफ होता है जिससे त्वचा निखरती है।

सर्दियों में चने के आटे का हलवा कुछ दिनों तक नियमित रूप से सेवन करना चाहिए। यह हलवा वात से होने वाले रोगों में व अस्थमा में फायदेमंद होता है।

रात को चने की दाल भिगों दें सुबह पीसकर चीनी व पानी मिलाकर पीएँ। इससे मानसिक तनाव व उन्माद की स्थिति में राहत मिलती है। ५० ग्राम चने उबालकर मसल लें। यह जल गर्म-गर्म लगभग एक महीने तक सेवन करने से जलोदर रोग दूर हो जाता है।

चने के आटे की नमक रहित रोटी ४० से ६० दिनों तक खाने से त्वचा संबंधित बीमारियाँ जैसे-दाद, खाज, खुजली आदि नहीं होती हैं। भुने हुए चने रात में सोते समय चबाकर गर्म दूध पीने से सांस नली के अनेक रोग व कफ दूर हो जाता है।

२५ ग्राम काले चने रात में भिगोकर सुबह खाली पेट सेवन करने से डायबिटीज दूर हो जाती है। यदि समान मात्रा में जौ चने की रोटी भी दोनों समय खाई जाए तो जल्दी फायदा होगा।

चने को पानी में भिगो दें उसके बाद चना निकालकर पानी को पी जाएँ। शहद मिलाकर पीने से किन्हीं भी कारणों से उत्पन्न नपुंसकता समाप्त हो जाती है।

हिचकी की समस्या ज्यादा परेशान कर रही हो तो चने के पौधे के सूखे पत्तों का धुम्रपान करने से शीत के कारण आने वाली हिचकी तथा आमाशय की बीमारियों में लाभ होता है।

पीलिया में चने की दाल लगभग १०० ग्राम को दो गिलास जल में भिगोकर उसके बाद दाल पानी में से निकलाकर १०० ग्राम गुड़ मिलाकर ४-५ दिन तक खाएँ राहत मिलेगी।

देसी काले चने २५-३० ग्राम लेकर उनमें १० ग्राम त्रिफला चूर्ण मिला लें चने को कुछ घंटों के लिए भिगो दें। उसके बाद चने को किसी कपड़े में बाँध कर अंकुरित कर लें। सुबह नाश्ते के रूप में इन्हे खूब चबा चबाकर खाएँ।

बुखार में ज्यादा पसीना आए तो भूने को पीसकर अजवायन और वच का चूर्ण मिलाकर मालिश करनी चाहिए।

चीनी के बर्तन में रात को चने भिगोकर रख दें। सुबह उठकर खूब चबा-चबाकर खाएँ इसके लगातार सेवन करने से वीर्य में बढ़ोतरी होती है व पुरुषों की कमजोरी से जुड़ी समस्याएँ खत्म हो जाती हैं। भीगे हुए चने खाकर दूध पीते रहने से वीर्य का पतलापन दूर हो जाता है।

दस ग्राम चने की भीगी दाल और १० ग्राम शक्कर दोनों मिलाकर ४० दिनों तक खाने से धातु पुष्ट हो जाती है।

गर्म चने रूमाल या किसी साफ कपड़े में बाँधकर सूँघने से जुकाम ठीक हो जाता है। बार-बार पेशाब जाने की बीमारी में भुने हूए चनों का सेवन करना चाहिए। गुड़ व चना खाने से भी मूत्र से संबंधित समस्या में राहत मिलती है। रोजाना भुने चनों के सेवन से बवासीर ठीक हो जाती है।

- By N. Shah

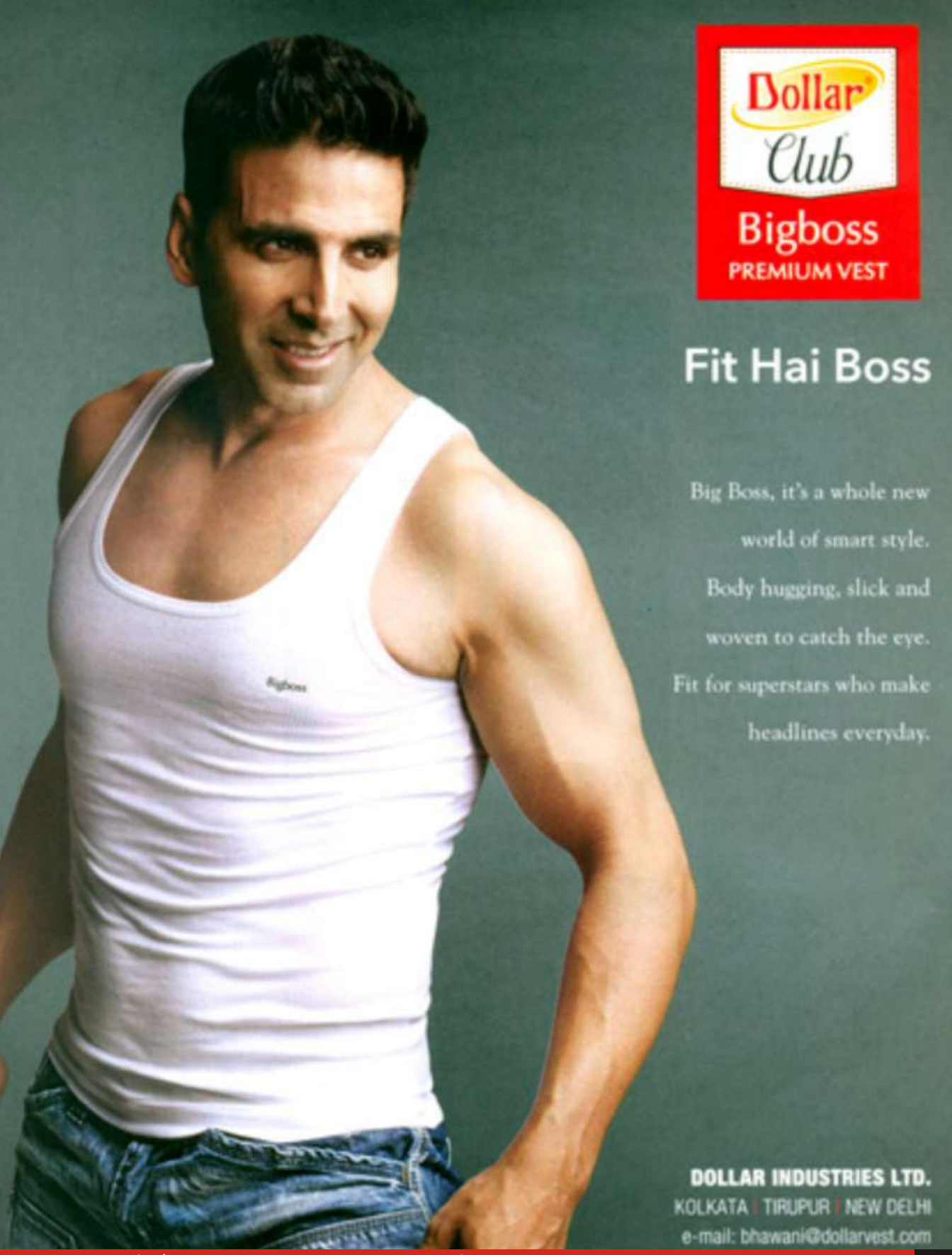
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Big Boss, it's a whole new world of smart style. Body hugging, slick and woven to catch the eye. Fit for superstars who make headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 January-2015 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

महर्षि दयानन्द सरस्वती

जितने ग्रह, नक्षत्र, जन्मपत्र, राशि, मुहूर्त्त आदि के फल के विधायक ग्रन्थ हैं, उनको झूठ समझ के कभी न पढ़ें और न पढ़ावें।

सत्यार्थप्रकाश- पृ. ७०

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य